# पलायन क्यों ?


प्रस्तुतकर्त्री

**आर्यिका श्री 105 विज्ञानमती माता जी**



**प्रकाशक**

**धर्मोदय साहित्य प्रकाशन**

**सागर ( म. प्र. )**



| | | |
|---|---|---|
| **कृति** | : | पलायन क्यों ? |
| **प्रस्तुतकर्त्री** | : | आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी |
| **संस्करण** | : | तृतीय, जनवरी, 2012 |
| **आवृत्ति** | : | 2200 प्रतियाँ |
| **मूल्य** | : | 15/- |
| **सर्वाधिकार सुरक्षित** | : | प्रकाशकाधीन |
| **प्राप्ति स्थान** | : | धर्मोदय साहित्य प्रकाशन<br>सागर (म. प्र.)<br>मो. 094249-51771 |
| **मुद्रक** | : | विकास आफसेट, भोपाल |

# पलायन क्यों ?

## अनुक्रमणिका


| क्र. | विषय | पृ. सं. |
|---|---|---|
| • | कृति और कृतिकार | 5 |
| • | स्वकथ्य | 7 |
| • | प्रकाशकीय | 9 |
| • | पुस्तक का उद्देश्य | 10 |
| • | पुस्तक के नाम की सार्थकता | 11 |
| • | पूर्व भूमिका | 12 |
| • | प्रेम की श्रेणियाँ | 13 |
| • | LOVE किसे कहते हैं ? | 15 |
| • | LOVE होने पर स्थिति | 15 |
| • | LOVE कब होता है ? | 17 |
| • | LOVE होने के कारण | 18 |
| • | माता-पिता के पक्ष लेने से | 18 |
| • | बच्चों की अज्ञानता से | 20 |
| • | कुशील पाप नहीं समझने/समझाने से | 21 |
| • | कुशील पाप कैसे समझायें ? | 23 |
| • | महाराज छत्रसाल | 26 |
| • | गुण्डागर्दी क्या है ? | 28 |
| • | एक बच्ची की घटना | 29 |
| • | कुशील को पाप क्यों कहते हैं ? | 31 |
| • | टी. वी. पर अश्लील कार्यक्रम देखने से | 33 |
| • | माता-पिता का कहना नहीं मानने से | 34 |
| • | क्या LOVE के लिए स्थानादि आवश्यक है ? | 35 |
| • | आश्चर्य तब होता है जब | 36 |
| • | क्या वासना के लिए उम्र होती है ? | 38 |
| • | LOVE का आरम्भ कैसे होता है ? | 40 |
| • | LOVE से हानियाँ | 42 |
| • | ज्योतिष की दृष्टि से हानि | 43 |
| • | आर्थिक हानि | 46 |
| • | सामाजिक हानि | 48 |
| • | परभविक हानि | 50 |
| • | यदि गर्भवती हो गई तो | 51 |
| • | शारीरिक हानि | 53 |
| • | नैतिक पतन | 53 |
| • | मानसिक अशांति | 55 |
| • | LOVE नहीं, देह बेच दी | 56 |
| • | LOVE के बदले मार मिली | 58 |
| • | बचपन का फल बुढ़ापे में | 58 |
| • | LOVE से मौत मिली | 59 |
| • | क्या LOVE सच्चा होता है | 61 |
| • | Love Marrige में रोज लड़ाई क्यों ? | 62 |
| • | किसके बच्चे LOVE करते हैं ? | 64 |
| • | कुशील पाप से बचाने के लिए ध्यान दें | 66 |
| • | LOVE से बचने के लिए सावधानियाँ | 67 |
| • | LOVE से बचने के लिए बच्चे ध्यान दें | 68 |
| • | उपसंहार | 68 |

# कृति और कृतिकार

भौतिकता की चकाचौंध में आज का व्यक्ति इतना भ्रमित हो गया है कि वह नैतिक–अनैतिक कार्यों को भूल गया है। उसे न अपना धर्म, न समाज, न कुल और न ही अपनी संस्कृति, मर्यादाएँ, परम्पराएँ याद रही हैं और तो और स्वयं का सभ्य जीवन भी भूल गया। अनेकानेक विकृतियों को देखकर ऐसा लगता है कि मानवपने को ही भूल गया है। तभी तो मानवता के स्तर से गिरकर पशु–पक्षियों जैसे चेष्टाएँ करने लगा है। पाश्चात्य संस्कृति पहले शैक्षणिक क्षेत्र में ही प्रवेश कर पायी थी, लेकिन आज तो वह भारतीयों के मानवीय मूल्यों में भी बेधड़क रूप से अधिपत्य जमाये हुए हैं। फलतः हमारी वर्तमान पीढ़ी नैतिक–आचरण से विमुख होकर अपने उज्ज्वल भविष्य से वंचित हो रही हैं और अपनी अस्मिता को क्षण–भंगुर विषयभोगों में ही लुटाने पर आतुर है। न उसे अपने माता–पिता से मतलब रह गया है न अपने गुरुजनों से कोई प्रयोजन है और न ही अपने वृद्ध अनुभवी दादा–दादी का कोई महत्त्व है। इन सभी दृष्टिकोणों पर नजर डालें, विचार करें कि आखिर हमारी युवा–पीढ़ी अपने यौवन–रूपी बहुमूल्य रत्न को कहाँ, किस वजह से व्यर्थ ही लुटा रही है ? जब हम अपने चारों तरफ दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि इसमें सबसे अधिक जिम्मेदार हमारे माता–पिता ही ठहरते हैं। तत्पश्चात् दूरदर्शन के प्रति आसक्ति और उन्हें कुशील/व्यभिचार पाप का अर्थ न समझाना एक कारण है।

प्रस्तुत कृति में राजस्थान की भीण्डर नगरी में सेठ बालूलाल जी की धर्मपत्नि श्रीमति कमलादेवी की गोद को 1963 में प्रकाशित करने वाली द्वितीय–तनया लीला जो वर्तमान में आर्यिका विज्ञानमती माताजी के नाम से प्राज्ञ–जनों में एवं जनसामान्य में भी अपने साहित्य–सृजन और सुसंस्कृत–आचरण से जानी जाती हैं। जिन्हें माँ ने बचपन में ही नैतिक–संस्कारों से सुसंस्कृत बनाया तो संतों–महंतों के आचरण ने, उपदेशों ने हिंसादि पाँच पापों से बचाया और स्वर्गीय आचार्यकल्प श्री विवेकसागर जी महाराज ने 2 फरवरी, 1985 को ग्राम कूकनवाली (राजस्थान) में आत्मकल्याणार्थ आध्यात्मिक संस्कारों का आरोपण कर स्वावलंबी जीवन जीना सिखाया। अपने माता–पिता, गुरुजनों से संस्कारित होकर पूज्य



आर्यिका श्री साध्य का तो प्रबल पुरुषार्थ कर ही रहीं हैं और दूसरों को भी साध्य की ओर अभिमुख होने का मार्ग अपनी आगमानुकूल चर्या से, हित–मित–प्रिय वचनावलि से और सुव्यवस्थित अजस्र लेखनी के माध्यम से प्रशस्त कर रही हैं, जिनके मन में सदैव आत्मतत्त्व की पूर्णता की भावना, जन्म–मरण से छूटने की लालसा बनी रहती है। जिनका विचार है कि हम जिस समाज में, जिस देश में रहते हैं, खाते हैं उसके प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है ? हम समाज को नैतिक–धार्मिक मूल्यों से जोड़ें। जोड़ने का पुरुषार्थ करें। हमारा मूल धर्म अहिंसा है तो हमारी मूल नैतिकता लज्जा है, शील है। हमारी किशोर पीढ़ी जो लज्जा को छोड़कर व्यभिचार जैसे घृणित कार्य में तत्पर देखी जा रही है, उसे हम दुराचरण से कैसे बचायें ? हमारे बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, उन्हें अध्यापिकाएँ हिंसा, झूठ, चोरी और परिग्रह, ये चार पाप तो समझा देती हैं, परन्तु कुशील पाप को समझाना टाल देती हैं। माता–पिता से कभी बच्चे पूछ लें कि यह कामवासना क्या है ? व्यभिचार क्या है ? तो वे उसे डाँट देते हैं, बड़े भैया–भाभी, दीदी...आदि अपने छोटे भाई–बहिनों को यह बात बताने में संकोच करते हैं और बच्चे नासमझी में किशोरावस्था में प्रवेश करते–करते ही अपने नैतिक जीवन को पतित कर लेते हैं और जब वह उस स्थान पर पहुँच जाते हैं कि घर से पलायन करने की सोचने लगते हैं या पलायन कर जाते हैं तब माता–पिता सोचते हैं, उस समय पास में हाथ मलने के सिवाए कुछ भी नहीं रह जाता है।

व्यभिचार बहुत बड़ा पाप है, जीवन का विनाश है, नैतिकता का ह्रास है, धर्म और धन का नाश है, इहलोक व परलोक को बिगाड़ने वाला है। इससे किस प्रकार से बच सकते हैं ? बच्चों को किस प्रकार की युक्ति व तर्क देकर, समझाकर नैतिक आचरण सिखायें और अपनी वृद्धावस्था को सुधारें। जिससे हमारा देश भारत जो पूरे विश्व को नीति व आचरण प्रदाता है, गुरु है वह यथावत् बना रहे, हमारे बच्चे राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर जैसे आदर्श जीवन जीकर सुख शांति को प्राप्त करें। स्वयं का, परिवार का, समाज का, देश का उद्धार करें। जो स्वयं स्वपर–कल्याण में निहित है और सत्त्वेषु मैत्री की भावना रखती है, उन्हीं के मानसतल से सृजित कर–कमलों से रचित यह कृति युग–युगान्तर तक हम सभी को दिशा–बोध प्रदान करें, हमारा जीवन भी स्वसाध्य को प्राप्त करे, इसी भावना के साथ परम यशस्वी, परम तपस्वी, परम ओजस्वी गुरु माँ के चरणारविन्दों में त्रिकाल नमन नमन नमन......।।

**अपनी गुरु माँ की चेरी**
**आर्यिका आदित्यमती**

# स्वकथ्य

संसार में रहकर भी जिन्होंने सर्वोत्तम शैलेश अवस्था को प्राप्त कर लिया है, उन भगवन्तों को मेरा मन-वचन-काय से नमस्कार हो। लोक के सभी आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी जो उस मार्ग पर लगे हुए हैं, उनके चरणों में भी मैं विनय पूर्वक प्रणाम करती हूँ।

जिन्होंने महिला का स्पर्श मात्र हो जाने पर उपवास आदि कठोर प्रायश्चित्त लेकर अपने शील को निर्दोष बनाया था, ऐसे मेरे दीक्षा गुरु स्वर्गीय आचार्यकल्प श्री विवेकसागर जी महाराज को तथा जो सैकड़ों स्त्री शिष्यों के संचालक होकर भी अपने शील में कभी दूषण उत्पन्न नहीं होने देते हैं, ऐसे संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के पदारविन्द में मैं भक्ति पूर्वक नमन करती हूँ। शिक्षा गुरु आर्यिका चन्द्रमती माता जी, आर्यिका विशालमती माता जी आदि आर्यिका वृन्दों को मेरा वन्दामि।

जिस शील का पालन करके जीव मरने के बाद भी युगों-युगों तक जीवित रहता है और जिसको नष्ट करके जीव जीते जी ही मृतवत् हो जाता है उसी शील और कुशील के बारे में मैं कुछ कहने का प्रयास कर रही हूँ। इसमें अल्प बुद्धि के कारण कुछ अन्यथा लिख जावे तो विद्वज्जन क्षमा करें। उनसे अपेक्षा है कि वे सुझाव के संकेत अवश्य देंगे।

वास्तव में इस पुस्तक में मैं उन प्रेमियों के बारे में बताना चाहती हूँ जो प्रेम का अर्थ नहीं समझ कर प्रेम करते हैं और अनजाने में ही कब उनका वह प्रेम LOVE में परिवर्तित हो जाता है और वे अपने माता-पिता, भाई-बन्धु, मित्रादि से आँख बचाकर पलायन कर जाते हैं /भाग जाते हैं।

उनको भागते समय यह भी ध्यान नहीं रहता है कि इस प्रकार छुपकर भागने से भविष्य में हमें क्या-क्या दुष्परिणाम मिल सकता है/मिलेगा। कुछ दिन पहले एक लड़की को अपने प्रेमी के साथ भागना था, माता-पिता के



अनुशासन के कारण वह चाहते हुए भी कई दिनों से भाग नहीं पा रही थी, उसके प्रेमी ने कई बार कोशिश की कि उसे अपने साथ भगा कर ले जावें, लेकिन वह सफल नहीं हो पाया, दोनों की असफलताएँ ही उनके भावी दाम्पत्य जीवन की असफलता का संकेत दे रही थीं पर उनको इसके बारे में कोई विचार ही उत्पन्न नहीं हुआ। एक दिन वह प्रेमी अपने मित्र से पैसे उधार लेकर किराये की फोर व्हीलर से अपनी प्रेमिका के यहाँ पहुँचा। रात्रि का समय था वह उसका इंतजार ही कर रही थी। अपने प्रेमी को देख उसने घर से बाहर निकलने के लिये सभी दरवाजे देखे लेकिन कहीं से निकलने का रास्ता नजर नहीं आ रहा था, वह पगली अपने प्रेमी के साथ भागने के लिये तीसरी मंजिल से नीचे कूद गयी। उसके हाथ-पैर टूट गये, उसका पागल प्रेमी गाड़ी में डालकर उसे निकट के शहर में हॉस्पिटल ले गया। हाथ-पैर में पट्टे बँध गये। महीनों तक बेड रेस्ट हो गया, उसके माता-पिता ने उसको इसलिए कुछ नहीं कहा कि घर, जमीन-जायदाद, धन-पैसा आदि नहीं होने के साथ-साथ लड़का कुछ कमाता भी नहीं था इसलिये उसको कोई अपनी लड़की नहीं देना चाह रहा था अर्थात् उम्र बढ़ती जा रही थी लेकिन शादी के कोई असार नजर नहीं आ रहे थे, आप सोचें एक लड़के के साथ प्रेम करके उस लड़की ने क्या सुख पाया होगा........? । बस उस लड़की और लड़के का प्रेम कैसे प्रारम्भ हुआ होगा ऐसे लड़के-लड़कियों का प्रेम कैसे प्रारम्भ होता है और किस प्रकार वह प्रेम वृद्धिंगत होकर पलायन करवा देता है इन सब बातों पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।

**-आर्यिका विज्ञानमती**

## प्रकाशकीय

पलायन क्यों ? नाम के अनुरूप इस कृति की समाज में अत्यन्त आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति परम वंदनीय आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी ने करके अनभिज्ञ-भ्रमित युवावर्ग के ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। आये दिन सुनने में आता है कि अमुक बेटी उसके साथ पलायन कर गई, तब ऐसा लगता है कि आज समाज में क्या हो रहा है। ये दुष्प्रवृत्ति कब दूर होगी, लेकिन आज इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद, मैं दावे से कह सकता हूँ कि जो भी यह कृति एक बार पढ़ लेगा, वह पलायन की सोच भी नहीं सकता। यह कृति पलायन करने की सोचने वाले को हिला कर रख देगी तथा पलायन न करने की प्रेरणा भी देगी।

इस कृति को लगभग 35 बिन्दुओं को आधार बनाकर लिखा गया है जिसमें पौराणिक घटनाओं को जितनी खूबी से प्रस्तुत किया है उतनी ही खूबी से वर्तमान में घटित घटनाओं को भी प्रसूत किया है। यह माता जी की गंभीर लेखन शैली का प्रमाण है।

इस कृति में LOVE का ओर और छोर या कहें प्रारम्भ और परिणाम, दशा और दुर्दशा का सम्यक् विवेचन किया गया है। जो भी पाठक इसके प्रथम पृष्ठ को एक बार पढ़ेगा, उसे पूरी पुस्तक पढ़ना ही पढ़ेगी, क्यों पाठक बात सही है कि नहीं ?

इस कृति के सम्पादक ब्र. संजीव भैया, कटंगी का भी आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में से कुछ समय निकाल कर कृति को पढ़ा और सम्पादन के दायित्व को बखूबी निभाया।

इस कृति को पाठकों के हाथों में सस्ते दामों में उपलब्ध कराने में अर्थ सहयोगी शाह परिवार, पनबारी वाले, घुवारा, चौधरी परिवार एवं नवयुवक मण्डल मालथौन का मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस कृति की लेखिका परम वंदनीय आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी तथा आर्यिका संघ के चरणों में विनम्र वंदामि....

**प्रकाशक**



## पुस्तक का उद्देश्य

जब कभी हम लोग बड़े-बड़े शहरों में जाते हैं, जहाँ के बच्चे होटल में जाना तो वैसा समझते हैं जैसे छोटे-छोटे गाँवों के बच्चे बेर, बीही (जामफल), जामुन, भुट्टा आदि खाने की याद आते ही खेत पर चले जाते हैं। जींस पहनना तो उनके मानों स्कूल की यूनिफार्म के समान आवश्यक हो। बाल कटवाना अर्थात् अनेक प्रकार की अलग-अलग स्टाईल में कटिंग करवाना मानों उनकी कुल परम्परा ही हो।

जहाँ पुराने जमाने में माताएँ अपनी बेटी की कसकर चोटी बाँधती थीं, जिसमें बाल लम्बे भी होते थे और बाल संवरे रहने से लड़कों की दृष्टि भी उन पर नहीं जाती थी क्योंकि सबके बाल लगभग एक जैसे ही बने रहते थे। उनको कपड़े भी अति चुस्त नहीं पहनाये जाते थे अथवा वे कपड़े इतने चुस्त नहीं पहनती थीं कि जिससे उनके अंगोपांग अलग से चमकें, ऐसे कपड़ों से उनके शील की रक्षा भी होती थी और अंगोपांग का विकास भी अच्छी तरह से होता था, इन सबके साथ सहशिक्षा अर्थात् लड़कों और लड़कियों की एक साथ पढ़ाई इन सबका दुरुपयोग करने के लिए मजबूर कर देते हैं। जिस किसी शहर में हम गये वहाँ की यह शिकायत अवश्य थी कि आज वो लड़की उसके साथ भाग गई। कोई लड़की तो निम्न जाति के युवकों के साथ ही भाग गई। इन सब दुष्कृत्यों पर रोक लगाने के अनेक प्रकार से आन्दोलन, कार्यक्रम, विद्वानों के उपदेश, व्याख्यान आदि करवाने / होने के बाद भी ये घटनाएँ दो-चार ही नहीं, हर आठ-पन्द्रह दिन में दो-तीन घटनाएँ ऐसी हो ही जाती हैं। इन सबको सुन-सुनकर ऐसा लगता कि अब क्या किया जाये? कैसे इन दुष्कर्मों से बच्चों को बचाया जाये। यदि ऐसा ही होता रहा तो धर्म का क्या होगा ? कैसे हमारी भारतीय संस्कृति जीवित रहेगी। बच्चों के साथ-साथ आजकल के माता-पिता भी इतने बुद्धिहीन हो गये कि वे इसको अपराध ही नहीं मानते हैं। वे तो यह कहते हुए भी सुने जाते हैं कि क्या हो गया, ऐसा तो सबके घर में होता रहता है। **आज के 90% घरों में ऐसी घटनायें हो रही हैं।** 90% बच्चे ऐसे काम करते हैं, हमारे बच्चों ने कर लिया तो क्या हो गया? जिसकी दो लड़कियों को बैंगलोर में 25-25 हजार का वेतन मिलता है ऐसी एक महिला से मैंने कहा तुम्हारी बेटियाँ रोज ऑफिस में पुरुष वर्ग के साथ रहती हैं, कहीं किसी के साथ उनका सम्बन्ध तो नहीं हैं ? उस महिला ने उत्तर दिया अरे माता जी ये दोनों किसी से फँस ही जाती तो आज हमें इतना परेशान तो नहीं होना पड़ता। एक लड़का-लड़की देखने गया। लड़की ने कहा मेरा तो उससे LOVE है। लड़के ने कहा ऐसे LOVE तो सबके चलते रहते हैं लेकिन तुम यह

बताओ कि क्या तुम मेरे से शादी करना चाहती हो? ऐसे माता-पिता और लड़के-लड़कियाँ हो गये तो हमारे देश में पलायन की परम्परा कभी समाप्त नहीं हो सकती। एक बार मैंने भी सोच लिया कि कोई एक पुस्तक लिख देने से इस परम्परा में कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। मन को बार-बार समझाने पर भी ऐसा लगा कि कोई सुधरे या न सुधरे, पलायन की कुरीति समाप्त हो या न हो मुझे अपने देश के प्रति कर्त्तव्य अवश्य पूरा करना चाहिए। यदि इस पुस्तक को पढ़कर एक बच्चा भी पलायन से बच जाता है/ एक पेयर भी LOVE कहाँ से प्रारम्भ होता है यह समझकर LOVE की शुरुआत में ही अपने बच्चों को सावधान कर दे तथा स्वयं भी सावधानी बरत कर एक बच्चे को भी पलायन से बचा ले तो हमारी संस्कृति बच जायेगी, हमारे धर्म की रक्षा हो जायेगी और यदि हमारे विद्वत् वर्ग, साधु-संत अथवा कोई संस्कारित व्यक्ति ऐसी पुस्तकें लिखे। एक-एक की पुस्तक से यदि एक-एक बच्चा भी पलायन से बचता है तो हमारे देश के युवा वर्ग का उद्धार सहज रूप से हो सकता है। अस्तु, इस पुस्तक को लिखने का मात्र एक ही उद्देश्य है कि सभी व्यक्ति इस व्यभिचार जैसे पाप से बचें। अपने धर्म, कुल तथा स्वयं को कलंकित होने से बचावें।

## पुस्तक के नाम की सार्थकता

**पलायन** का अर्थ होता है आँख बचा कर भाग जाना। वैसे संसार में कई कारणों से लोग पलायन कर जाते हैं, कई लोग घर की स्थिति से बचने के लिए पलायन कर जाते हैं, कई लोग अपनी पत्नि से घबरा कर भाग जाते हैं, कई लोग श्रम से डर कर घर छोड़ देते हैं। यहाँ इन सब पलायनों की बात नहीं है, यहाँ मुख्य रूप से उस पलायन की बात है जिस पलायन के बाद फिर से पलायन की आशंका बनी रहती है, जिस पलायन में समझदारी आने के बाद मात्र पश्चाताप हाथ लगता है, जिस पलायन के बाद माता-पिता-कुटुम्ब आदि से प्रेम, स्नेह सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ता है तथा जो सभी पलायनों में सबसे ज्यादा निकृष्ट माना जाता है, जिस पलायन में सुख नजर आते हुए भी पग-पग पर दुःख की कड़वी घूट पीनी पड़ती हैं वह पलायन घटित होता है उन प्रेमियों के बीच में जिनको प्रेम का वास्तविक स्वरूप ज्ञात नहीं है, जो प्रेम का कोई महत्त्व ही नहीं समझते हैं, जिनका प्रेम ओस की बूँदों के समान कब सूख जाता है पता ही नहीं लग पाता है, उस पलायन के मुख्य कारण क्या हैं ? पलायन करने की प्रथम भूमिका क्या होती है आदि बातों पर इसमें प्रकाश डाला गया है इसलिए इस पुस्तक का नाम **'पलायन क्यों?'** रखा गया है।



## पूर्व भूमिका

संसार का प्रत्येक प्राणी किसी से प्रेम करता है तो किसी से द्वेष। जहाँ प्रेम होता है वहाँ द्वेष परिणाम भी निश्चित रूप से होता है। प्रत्येक जीव में प्रेम और द्वेष दोनों पाये जाते हैं क्योंकि किसी भी जीव को संसार की सभी चीजें अच्छी नहीं लगती तो किसी भी जीव को सभी चीजें खराब भी नहीं लगती हैं, बस यही संसार है और यही संसार के दुःख तथा भ्रमण का कारण है। ये प्रेम-द्वेष के परिणाम सभी जीवों में होते हैं चाहे वह नारकी हो या देव, पशु हो या नासमझ मनुष्य, पागल हो या समझदार, विद्वान् हो या मूर्ख। वास्तव में प्रेम कोई बाहरी दिखने की चीज नहीं होती है वह तो अन्तरंग की सन्तुष्टि है। एक चींटी भी प्रेम करती है। एक वृक्ष, पेड़, पौधों को भी अपनी अनुकूल वस्तुओं से प्रेम होता है। वह उसको चाहता है, वह उसे प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करता हुआ दिखाई देता है। जैसे धूप निकलते ही कुछ पौधे विकसित हो जाते हैं, कुछ पौधों में फूल खिलते हुए दिखाई देते हैं तो किसी को वही अच्छी नहीं लगती है जैसे धूप निकलने पर कुमुदनियाँ मुरझाती हुई दिखाई देती हैं। जिन वनस्पतियों को धूप अच्छी नहीं लगती वे सहमी-सहमी दिखने लगती हैं, उनके पत्तों की कांति फीकी पड़ जाती है आदि-आदि। प्रेम और विषाद के सूचक चिह्न लोक में दिखाई देते हैं। इस जीव को जो वस्तु चाहे वह चेतन हो या अचेतन अच्छी लगती है उससे वह प्रेम करता है और जो अच्छी नहीं लगती है उससे द्वेष करता है। कभी-कभी वही वस्तु द्रव्य, क्षेत्र, काल के निमित्त से अच्छी लगती है और कुछ ही देर में वही वस्तु खराब लगने लगती है। यह सब स्वयं का अपना मोह परिणाम है। जब जोर से भूख लगती है तब रूखी-सूखी बिना नमक की सब चीज अच्छी लगती है और पेट भरने के बाद या स्वास्थ्य बिगड़ने अथवा मानसिक अशांति हो जाने पर अपनी सबसे प्रिय मिठाई, खटाई भी रुचिप्रद नहीं लगती है अर्थात् संसार की कोई वस्तु अच्छी-बुरी नहीं होती, अपितु वस्तु का भोक्ता यह आत्मा ही कर्मोदय के अधीन होकर उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार अच्छा-बुरा मानता हुआ प्रेम (राग) और द्वेष करके कर्म बाँधता है तथा नाना गतियों में परिभ्रमण करता हुआ सुख-दुःख भोग रहा है और यदि यह इनसे नहीं बचा तो आगे भी संसार में भ्रमण करता ही रहेगा।

❑ **प्रेम की श्रेणियाँ :**

जन्म लेते ही बच्चे को माँ से प्रेम होता है, उस समय बच्चा अपनी माँ को ही पूरा संसार मानता है। वह माँ को छोड़कर किसी के पास जाना नहीं चाहता है, माँ को छोड़कर किसी से बोलना नहीं चाहता...... अर्थात् माँ ही उसका सर्वस्व होती है। कुछ बड़ा होने पर उसका प्रेम स्नेह में ढ़लता हुआ खिलौने से बढ़ जाता है। वह खिलौने से दूर जाने पर रोता है, छीन लेने पर मचलता है, गुम जाने पर तो वह स्वयं ही गुम जाता है, अर्थात् वह सोते समय तक भी अपने खिलौने, गुड्डा, पप्पू, गुड़िया आदि को साथ लेकर सोता है। मामा-बुआ आदि के यहाँ जाते समय अपने साथ ले जाता है, उसका अधिकांश समय खिलौनों के सजाने-सम्हालने में ही व्यतीत होता है। वही प्रेम जब मित्र मण्डली में जा मिलता है तो वात्सल्यपने को प्राप्त होता है। वह मित्रों के साथ ही खाना-पीना, खेलना-सोना, बैठना पसन्द करता है। मित्रों के बिना उसको अपना जीवन व्यर्थ लगता है। लेकिन वह मित्रता भी खिलौने आदि के प्रेम के समान कुछ समय ही होती है। वही प्रेम जब दीन-दुःखी जीवों को देखकर करुणा के रूप में हृदय से उमड़ पड़ता है तो उस समय वह दुखी जीवों की सेवा करके ही अपने आपको कृतार्थ मानता है।

वही प्रेम जब देश सुरक्षा, देश विकास आदि के रूप में सामने आता है, उस समय वह अपने देश की रक्षा के लिए सैकड़ों बेकसूर सैनिकों के प्राण हरण कर लेता है, युद्ध में स्वयं मरने और मारने के लिये तैयार रहता है, इसे ही देशभक्ति कहा जाता है उसका वही प्रेमभाव जब गुरुओं के चरणारविन्द की भक्ति में लगता है। तब वह उनके चरणों में अपने आपको समर्पित कर देता है। उस समय उसके लिए गुरु की आज्ञा ही सर्वोपरि होती है, वह गुरु के आशीर्वाद के बिना एक कदम भी नहीं रखता है। ये गुरु की संगति ही उसके जीवन में अमृत का काम करती है। उसका जीवन विकास की ओर बढ़ने लगता है। यह सत्संगति यदि उसके जीवन में स्थाई हो जाती है तो उसके जीवन में कभी पतन के अवसर नहीं आते हैं। यही गुरुभक्ति कहलाती है। उसका वही प्रेम जब अपने आराध्य त्रैलोक्य पितामह के चरणों में अर्पित हो



जाता है तो उसे श्रद्धा नाम से कहा जाता है, यही श्रद्धा संसार-सागर को पार करने के लिए बीजारोपण के समान होती है अर्थात् शास्त्रीय भाषा में इसे सम्यग्दर्शन कहा जाता है और वही प्रेम जब संपूर्ण परद्रव्यों को छोड़कर अपनी आत्मा को प्राप्त करने के लिए स्वयं में लवलीन हो जाता है तब उसे ध्यान कहते हैं और यह ध्यान प्रेम एवं द्वेष दोनों का नाश करने में समर्थ होता हुआ परमात्म दशा को प्राप्त करा देता है।

यहाँ उपर्युक्त किसी भी प्रेम का प्रकरण नहीं है। यहाँ मैं उस प्रेम के बारे में बताना चाहती हूँ, जिस प्रेम को लोक में LOVE के नाम से कहा जाता है। यद्यपि LOVE और प्रेम में कोई अन्तर नहीं है। एक अंग्रेजी का शब्द है तो दूसरा हिन्दी का। फिर भी LOVE शब्द सामने आते ही व्यक्ति की दृष्टि उस तरफ चली जाती जहाँ एक लड़के और लड़की का गलत/वासना प्रद सम्बन्ध होता है। जहाँ एक-दूसरे के प्रति समाज, घर, परिवार से आस-पड़ोस आदि से छुपकर एक-दूसरे से मिलने-बोलने, बैठने, खाने-पीने के भाव रहते हैं। इसके हो जाने पर समझदार भी पागल हो जाता है, धनाढ्य भी निर्धन के समान चेष्टाएँ करने लगता है, बलवान भी निर्बल के समान हो जाता है। शूरवीर भी कायर के समान गिड़गिड़ाने लगता है, धर्मात्मा भी पाप के गर्त में गिरने के लिए तैयार हो जाता है, राजा भी दास कर्म करने के लिए मजबूर हो जाता है, उसी LOVE के बारे में हम आगे समझने की कोशिश करते हैं। उसके बारे में समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

1. LOVE किसे कहते हैं ?
2. LOVE होने पर स्थिति
3. LOVE कब होता है ?
4. LOVE का प्रारम्भ कैसे होता है ?
5. LOVE से हानि
6. किसके बच्चे LOVE करते हैं ?

## ❑ LOVE किसे कहते हैं ?

LOVE शब्द स्वयं अपने आप में क्या कहता है उसको आप सोच लें, तो भी आपका मन कभी LOVE करने का नहीं हो सकता है-

L का अर्थ Lake of sorrow = लेक आफ सारो = दुःखों की झील

O का अर्थ Ocean of tears = ओशन आफ टीअर्स =आँसुओं का महासागर

V का अर्थ Valley of death = वेली आफ डेथ = मौत की घाटी।

E का अर्थ End of life = एण्ड आफ लाइफ = जीवन का अंत

अर्थात्- LOVE करने वाला सर्वप्रथम दुःखों की झील में डूबने लगता है फिर दुःखों को सहन नहीं कर पाने से अपनी ही करनी पर पश्चाताप करता हुआ इतने आँसू बहाता है कि उनको इकट्ठा करो तो मानो सागर ही भर जावे। उसके आँसू बहाने और अन्दर ही अन्दर घुटने के कारण वो मौत की घाटी को पार करने में असमर्थ होता हुआ अर्थात् असह्य बीमारियों को ठीक करवाने में सक्षम नहीं होता है, फलतः अन्त में वह अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर देता है।

## ❑ LOVE होने पर स्थिति :

LOVE होने पर लड़का-लड़की/स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते। चाहे वे शरीर से दूर-दूर रहें लेकिन उनका मन एक-दूसरे में ही लगा रहता है। प्रेम हो जाने पर समझना चाहिए की व्यक्ति पागल हो जाता है अर्थात् उसका विवेक समाप्त हो जाता है अथवा यूँ कहना चाहिए कि पागल को तो किसी तरह वश में किया जा सकता है, समझाया जा सकता है, ताला आदि लगाकर कहीं जाने से रोका जा सकता है लेकिन प्रेम में पागल व्यक्ति को न समझाया जा सकता है और न किसी उपाय से रोका जा सकता है इसलिए उसको समझदार पागल कहा जा सकता है। एक लड़का एक दिन किसी साधु के आहार (भोजन) देखने जा रहा था, जाते-जाते रास्ते में वह एक कुत्ते से टकरा गया। जब कुत्ता भौंकने लगा तब उसे समझ में आया कि मेरा पैर कुत्ते पर पड़ गया है। इसके बारे में खोजबीन की गई तो पता लगा की वह जहाँ आहार देखने जा रहा था, वहाँ एक लड़की जिससे उसका LOVE था साधु को आहार दे रही थी वह बहुत दूर से उसे देखते हुए



कल्पनाएँ करता जा रहा था। इसलिए उसे कुत्ते जैसा बड़ा जीव भी नहीं दिखा और सच पूछो तो वह आहार देखने के बहाने लड़की को देखने/उससे मिलने जा रहा था, यह LOVE है। यह LOVE के चिह्न हैं। प्रेम हो जाने पर सर्वत्र/सभी में मात्र वही-वही दिखने लगता है। LOVE के लिए स्त्री-पुरुष का साक्षात्कार हो ही, यह कोई जरूरी नहीं, उसके बारे में सुनकर, उसकी फोटो देखकर, उसके बारे में कल्पना करके भी LOVE हो सकता है। इतिहास इसका साक्षी है कि कई लड़कियों ने अर्जुन की वीरता के बारे में सुनकर, कई ने युधिष्ठिर के गुणानुराग से प्रभावित होकर, कई ने भीम के बल पराक्रम की गाथा सुनकर उनसे LOVE कर लिया अर्थात् उनके साथ शादी करने का संकल्प कर लिया और उनके मरने की बात सुनकर स्वयं आत्महत्या करने के लिए तैयार हो गईं। यद्यपि भविष्य में अर्जुन आदि का मिलना संभव है क्योंकि महापुरुष अकाल में नहीं मरते। इस प्रकार आश्वासन देने पर उन्होंने आत्महत्या नहीं की। लेकिन यदि नहीं मिले तो हम जीवित नहीं रह सकते, इस प्रकार का संकल्प तो था ही।

इसी प्रकार राजा श्रेणिक चेलना के, श्रीकृष्ण रुक्मिणी के चित्र को देखकर मोहित हो गए थे। ये सब समझदार थे अर्थात् LOVE क्या होता है इस बात को समझने वाले थे, बलवान तथा स्थिर चित्त वाले थे इसलिए उन्होंने अपने बल और युक्ति से कार्य की सिद्धि कर ली। तो उन्हें इस प्रकार का कार्य करने पर भी कोई पाप नहीं लगा। लेकिन वे भी यदि उनके साथ शादी के पहले अन्यथा प्रवृत्ति करते तो उन्हें भी व्यभिचार का पाप अवश्य लगता।

आज के व्यक्ति/बच्चों में LOVE तो संभव है, वैसा हो लेकिन बल तथा स्थिरता वैसी नहीं है और न हो ही सकती है क्योंकि वे क्षत्रिय थे, ये बनिये, ब्राह्मण या नीच कुलीन हैं। इनमें इतनी स्थिरता, इतना बल तथा अपने वचनों पर पत्थर की लकीर के समान अडिगता आ ही कहाँ से सकती है ? ये तो जब देखो पल-पल में ही बदलते रहते हैं और नहीं बदलते होते तो आज जेल, जज और न्यायालय बढ़ते हुए क्यों दिखते? इनको देखकर यह विश्वास होता है कि आज व्यक्ति बहुत जल्दी बोलकर बदल जाता है फिर आज के

जमाने में LOVE करने वाले पर विश्वास ही कैसे किया जा सकता है ? और जब LOVE तथा LOVE करने वाले पर विश्वास नहीं है तो LOVE करने से लाभ ही क्या है ? कुछ दिन पहले कुछ लड़के आये थे, उन्होंने कहा–माता जी! मुझे / हमें एक नियम दे दीजिये। मैंने कहा–क्या तुम लोगों का किसी से LOVE है ? उनमें से एक ने कहा कि मेरा दो लड़कियों से LOVE है, मैं एक को बहिन बना लेता हूँ और दूसरी से शादी करूँगा.......। दूसरे ने कहा मेरा चार लड़कियों से LOVE है, लेकिन मैं एक से भी शादी नहीं करूँगा। शादी तो मैं किसी जैन की लड़की से करूँगा। मैंने कहा यदि तुम्हें किसी से शादी नहीं करना है तो क्यों ऐसे गंदे काम करते हो ? उसने कहा मैंने तो मात्र मनोरंजन के लिए उनसे LOVE किया है। आप LOVE करने के पहले सोचें, कहीं आपके साथ भी ऐसा तो नहीं हो रहा है। वास्तव में इस जमाने में LOVE करने का फल या तो आत्महत्या करके मरना है या जीवन भर घुट–घुट कर जीना है।

❑ **LOVE कब होता है ?**

बच्चा जब आठ वर्ष का हो जाता है, उसमें वासनाप्रद प्रेम उत्पन्न हो सकता है क्योंकि इसी उम्र में लड़की में स्त्री के योग्य हार्मोन्स उत्पन्न होना प्रारम्भ हो जाते हैं। उसकी अभिव्यक्ति दस–बारह वर्ष की उम्र में लड़की के रजस्वला (M.C.) के रूप में होती है। स्त्री के योग्य अंगोपांग का विकास, लज्जा की अनुभूति, अपने आपको विशेष सुन्दर बनाने, साज–सज्जा, शृंगार आदि में रुचि बढ़ना भी स्त्रीत्व का लक्षण है तथा इसका मुख्य लक्षण पुरुषों की ओर आकर्षण बढ़ना है, यद्यपि इस उम्र में उसको पुरुषों के पास जाना, पुरुष के द्वारा स्पर्शादि करके खेलना, हँसी–मजाक करना आदि पसंद नहीं होता लेकिन अन्दर अर्थात् मन में पुरुष वर्ग को गुप्त रूप से देखने, उनसे बोलने आदि के प्रति विशेष रुचि रहती है। लड़कों में पुरुषों के योग्य अंगोपांग का विकास, अपने आप में कॉन्फिडेंस बढ़ना, निडरता आदि दिखने लगते हैं। यह शारीरिक संरचना के आधार से कहा गया है। वैसे संसार के प्रत्येक प्राणी में वासनाएँ होती हैं। उस वासना की अभिव्यक्ति के लिए योग्य शरीर की भी आवश्यकता होती है। योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के बिना वासना की पूर्ति नहीं की जा सकती है। इसलिए शारीरिक क्षमता तथा योग्य द्रव्यादि की



अनुकूलता मिलने पर ही कार्य की सिद्धि होती है। विपरीत द्रव्यादि को मिला लेने पर उसका विपरीत परिणाम होता है। इसलिए यहाँ पर उस वासना से बचने के लिए वासना की उत्पत्ति होने के बाद भी हम उस वासना की पूर्ति के लिए अन्यथा प्रवृत्ति नहीं करें अर्थात् जब तक विवाह नहीं हो जाता तब तक मन को वश में रखें, मन में वासना पूर्ति के विचार नहीं आने दें। कभी लड़के / लड़की से आकर्षित होकर वासना पूर्ति का प्रयास न करें। कामोत्तेजक बातें नहीं करें, ऐसी पुस्तकें नहीं पढ़ें, जिनसे वासना जाग्रत हो, ऐसे व्यसनी–व्यभिचारी कामी लोगों की संगति से दूर रहें, सज्जन–शीलवान व्यक्तियों की संगति में रहें, यही वासना से बचने का उपाय है, वासना पूर्ति के प्रतिकूल साधन हैं, इनका प्रयोग करने से वासना की उत्पत्ति होने के बाद भी अन्यथा प्रवृत्ति नहीं होती है इन्हीं सत्साधनों को छोड़ देने से प्रेम (LOVE) की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

❑ **LOVE होने के कारण :**

1. माता–पिता के पक्ष लेने से।
2. बच्चों की अज्ञानता से।
3. कुशील पाप नहीं समझने / समझाने से।
4. T.V. पर अश्लील कार्यक्रम देखने से।
5. माता–पिता की बात नहीं मानने से।

**1. माता–पिता के पक्ष लेने से :**

LOVE का प्रारम्भ होते ही या लड़के–लड़की के आपसी व्यवहार में कुछ परिवर्तन देखकर भी और किसी के द्वारा इसके विषय में शिकायत करने पर माता–पिता के द्वारा अनसुनी कर देने के कारण भी बच्चों में LOVE की स्थितियाँ आगे बढ़ती जाती हैं। एक लड़की को जब किसी लड़के ने छेड़ा तो उसने अपनी मम्मी से कहा–मम्मी! वो लड़का मुझे छेड़ता है। माँ ने कहा–कोई बात नहीं मैं उसको कह दूँगी/ समझा दूँगी। उसने यह तक नहीं सोचा कि क्या एक वासनाग्रस्त व्यक्ति/लड़का थोड़ा–सा समझाने पर समझ सकता है ? मेरे विचार से तो बहुत समझाने पर भी नहीं समझ सकता है। माँ ने उस लड़के को अपनी भाषा में सामान्य रूप से समझा दिया लेकिन अपनी बेटी को उसके

यहाँ (लड़की उसके यहाँ कम्प्यूटर सीखने जाती थी) जाने से नहीं रोका। फलतः उसका LOVE आगे बढ़ता गया। एक लड़की को अपनी क्लास के एक लड़के से इतना लगाव हो गया कि समाज के लोग-बच्चे तक उनका LOVE समझने लग गये। कुछ निकटतम व्यक्तियों ने लड़की के पिता से शिकायत करते हुए कहा आपकी बेटी के कदम कुछ गलत रास्ते पर जा रहे हैं, आप उसका स्कूल जाना बंद कर दें या दूसरे स्कूल में पढ़ावें अथवा प्राइवेट पढ़ावें। ताकि उस लड़के से लड़की का सम्पर्क नहीं हो पावे। लड़की के पिता ने कहा-कुछ नहीं होगा, मैं अपनी बेटी को डॉट दूँगा/समझा दूँगा, आप चिन्ता नहीं करें, लेकिन मैं अपनी बेटी की पढ़ाई नहीं छुड़वा सकता हूँ और न ही प्राइवेट पढ़ा सकता हूँ क्योंकि मेरी बेटी पढ़ने में कमजोर है। कुछ दिन ऐसा ही चलता रहा। पुनः समाज की कुछ महिलाओं ने बेटी की माँ के सामने वही बात रखी। फिर भी उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। नतीजा यह निकला की वह दिन आ ही गया कि उनकी बेटी उस लड़के के साथ भाग गई। कोर्ट में शादी कर ली और आकर उसी गाँव में रहने लगी। अब तो माता-पिता, परिवार आदि के लिए उनको देख-देख कर जलना ही शेष रह गया था। वे उसको हीन कुल के योग्य काम करते देखकर अपनी ही लापरवाही पर पश्चाताप करते रहते......।

एक लड़की के माता-पिता बाहर गाँव रहते थे, उसकी बेटी दादा-दादी के पास रहती थी, वह किसी लड़के से लग गयी। दादा-दादी, बुआ-चाची आदि ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह किसी से डरती नहीं थी। जब उसके मम्मी-पापा आये तो सबने उसकी शिकायत की। शिकायत सुनकर उसकी मम्मी ने कहा-अरे मेरी बेटी तो ऐसी हो ही नहीं सकती। मेरे बच्चे सुन्दर नहीं हैं, पढ़ने-लिखने में होशियार नहीं हैं, इसलिये तुम लोग उनको चाहते नहीं हो, तभी तो झूठी शिकायत कर रहे हो.....। थोड़े दिन बाद जब उसके मम्मी-पापा के पास पुनः गाँव के लोगों ने शिकायत की तो बेटी की माँ, बेटी की खोटी आदतें सुधारने के उद्देश्य से वहाँ आकर रहने लगी। कुछ ही दिनों में माँ को अपनी बेटी की करतूतें समझ में आने लगीं। जब उसने अपनी बेटी का बस्ता देखा, कपड़े आदि की जाँच-पडताल की तो उसके बस्ते आदि में लड़कों के साथ उसकी अनेक प्रकार की इतनी अश्लील फोटो मिली, जिन्हें



देखकर मम्मी की आँखें बन्द हो गयीं / खुली की खुली रह गयी। लेकिन अब क्या हो सकता था ? **''अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत''** वाली कहावत चरितार्थ हो गई। फिर भी उसने अपनी बेटी को इस पाप से बचाने के लिए दूसरे गाँव (रिश्तदारों के यहाँ) भेज दिया। लेकिन उस मूर्खा ने वहाँ जाकर भी वही काम किया। वास्तव में एक बार खोटी आदत पड़ जाने पर उसको छोड़ना बड़ा ही कठिन है। ऐसा होता है गलत कार्य करने पर भी पक्ष लेने का दुष्परिणाम। एक माँ ने मोह के वशीभूत होकर अपनी ही बेटी की जिन्दगी को बर्बाद कर दिया।

**2. बच्चों की अज्ञानता से :**

अधिकतर बच्चे इस बात को जानते भी नहीं है कि हम क्या कर रहे हैं? हमें क्या करना चाहिए ? हम जो कर रहें हैं उसका फल क्या होगा? आदि-आदि के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण ऐसे काम कर लेते हैं जो समझदारी आने के बाद जीवन भर चुभते रहते हैं। कई बच्चे T.V. पर सीरियल-पिक्चर आदि में पात्रों के अभिनय को देखकर वैसा काम करने लग जाते हैं। कई बच्चे आपस में पेंटी खोलकर खेलने का खेल खेलते हैं, वे यह नहीं जानते हैं कि इसे अब्रह्म कहते हैं, इस पाप का फल नरक आदि दुर्गतियाँ होती हैं। एक दिन एक लड़की प्रायश्चित लेने के लिए आई उसने कहा-माता जी! मैं अपने मामा के घर गई थी, मामा के दो लड़को ने मेरे साथ गलत काम किया था। मैंने कहा-जब तेरे मामा का लड़का तेरे साथ गलत काम करने लगा तो क्या तूने कुछ नहीं कहा, तूने वहाँ से भागने की कोशिश नहीं की तथा जब एक लड़के ने तेरे साथ ऐसा कर लिया तो क्या तूने दूसरे लड़के के साथ सावधानी नहीं बरती, तू उससे अकेले में क्यों मिली, तूने अपने मामा-मामी को ये बात क्यों नहीं बताईं, क्यों नहीं ऐसे काम होते ही तू अपने घर लौट आई.....। इन सब प्रश्नों का उसके पास कोई उत्तर नहीं था, वह इतने प्रश्न पूछने के बाद भी मौन थी, उसके मौन चेहरे को देखकर मैं समझ गयी कि वह स्वयं इस बात में इन्ट्रेस्टेड थी। इसका कारण शायद उसने T.V. में जो छाया चित्र देखे होंगे उन्हीं को अपने जीवन में अपना लिया। जब वह बड़ी हुई उसको धर्म समझ में आया तब वह प्रायश्चित लेने आई। ऐसी घटनायें कई

बच्चों के साथ घटती होंगी। घटती ही हैं और जब वे बड़े हो जाते हैं तब लगभग 99% बच्चों को उसका पश्चाताप भी होता ही होगा। उनमें से कई बच्चे प्रायश्चित भी लेते होंगे और कई बच्चे अन्दर ही अन्दर घुटते होंगे तो कई बच्चों को समय-समय पर जब गुरुओं से या साहित्य में अपने पाप की जानकरी मिलती होगी तो तात्कालिक पश्चाताप तो अवश्य ही होता होगा।

कई बच्चे तो आपस में मित्रता निभाते हुए LOVE के कितने निकट पहुँच जाते हैं, उसका उनको पता ही नहीं लग पाता है, वे तो अपनी धुन में रहते हैं। आखिर वो हो जाता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

**3. कुशील पाप नहीं समझने/समझाने से :**

हर माता-पिता चाहते हैं कि हमारे बच्चे सदाचारी, सभ्य और धर्मात्मा होवें। उनमें चोरी करना, झूठ बोलना, शराब पीना आदि गलत आदतें न हों और विशेष रूप से चरित्र (charactor) तो किसी प्रकार खराब न हो अर्थात् कुशील पाप-परस्त्रीगामी-वेश्यागमन जैसे महापाप तो वे कभी नहीं करें क्योंकि संसार में कुशील पाप सबसे बड़ा पाप माना गया है। कुशील पाप के होने पर हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह, मायाचारी, छल-कपट, क्रोधादि पाप तो सहज रूप से स्वयमेव हो जाते हैं अथवा कुशील पाप करने पर हिंसा आदि पाप करने ही पड़ते हैं। जिसने कुशील अर्थात् Love/ व्यभिचार किया है वह अपने भाई, पति, पिता, पुत्र आदि को मारने में भी नहीं डरता है। उस पापी को झूठ तो बोलना ही पड़ता है क्योंकि वह जब अपनी प्रेमिका या प्रेमी से मिलकर आता है, उस समय कोई कहाँ गये थे, क्यों गये थे, कब से गये थे आदि पूछ ले तो उसे उसका उत्तर झूठ बोलकर ही देना पड़ता है। अपने प्रेमी / प्रेमिका की इच्छा पूर्ति के लिए जब धन की आवश्यकता पड़ती है तो उसे चोरी भी करनी पड़ती है और अपनी प्रेमिका के साथ जीवन निर्वाह करने के लिए उसे परिग्रह इकट्ठा करना भी आवश्यक हो जाता है। जब उसको अपनी प्रेमी/ प्रेमिका से मिलने, बोलने, बैठने आदि में कोई व्यवधान करता है तो उसके ऊपर उसे क्रोध भी आता ही है और छल किये बिना प्रेम हो ही नहीं सकता है। अतः सिद्ध है कुशील पाप करने वाले को सभी पाप/अनर्थ करने ही पड़ते हैं।

प्रेम करने वाली एक धनश्री नाम की महिला को जब एक ग्वाले से



प्रेम हो गया तो उसने सोचा जब तक मेरा पति है, मैं स्वतंत्र रूप से अपने प्रेमी के यहाँ नहीं जा सकती इसलिए उसने अपने प्रेमी से छलपूर्वक अपने पति को मरवा दिया और जब उसके बेटों ने उन दोनों को डिस्टर्ब किया तो उसने अपने बेटों को भी मरवाने का षड्यंत्र रच दिया। वास्तव में यह LOVE जिसके दिल में उत्पन्न हो जाता है उसके ऊपर मानो एक भूत ही सवार हो जाता है। भूत को तो मंत्र-तंत्र से वश में किया जा सकता है लेकिन जिसको प्रेम रूपी भूत लग गया है, उसे मंत्र-तंत्र से भी वश में नहीं किया जा सकता। जिसको प्रेम हो जाता है उसको कितना ही प्रेम से डॉट-फटकार करके, धमकी आदि देकर समझाने पर भी वह नहीं समझ सकता है, उसको समझाने के सभी प्रयास व्यर्थ ही जाते हैं तथा जब उसको LOVE का सही अर्थ और सही फल समझ में आता है तब तक तो उसका LOVE इतना वृद्धि को प्राप्त हो चुका होता है कि वह प्रेमिका / प्रेमी के चक्कर में माता-पिता, भाई-बन्धु, धन-सम्पत्ति सबको छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है लेकिन अपने प्रेमी को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो पाता है।

एक अच्छे धनाढ्य परिवार का लड़का था जिसको एक विधवा गरीब स्त्री की बेटी से LOVE हो गया। जब उसने उस लड़की से शादी की बात रखी तो उसके माँ-बाप ने कहा-यदि तुम उस लड़की से शादी करोगे तो हम तुम्हें न एक पैसा देंगे और न ही अपने घर में आने देंगे। जिस दिन तुम उससे शादी कर लोगे उस दिन से तुम्हारे साथ हमारा और पूरे कुटुम्ब, परिवार, रिश्तेदारों का कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। लड़के ने यह सब भी स्वीकार कर लिया और उस लड़की से शादी कर ली। फल यह हुआ की उसके घर में कुछ दिन तक तो रोटी-दाल-सब्जी की भी मुश्किल पड़ गई। जब वह कुछ कमाने लगा, बच्चे हो गये, अच्छा मकान बन गया, पत्नि के आभूषण आदि बनवा दिये। तब उसकी पत्नि अपने सोने के आभूषण और मुख्य सम्पत्ति लेकर किसी और लड़के के साथ भाग गयी। अर्थात् वह किसी दूसरे लड़के से LOVE करके उसके साथ चली गई। बेचारे लड़के ने सोचा अब इन बच्चों को रोटी कौन खिलायेगा ? इनका लालन-पालन कौन करेगा ? उनको लेकर वह अपने माता-पिता के पास गया, लेकिन माता-पिता ने तब तक किसी दूसरे लड़के

को गोद लेकर अपनी सम्पत्ति का मालिक बना दिया था, उसे क्यों रखते ? आखिर उसने अपनी जिन्दगी कैसे निकाली होगी ? आप स्वयं सोचें.........।

अपने बच्चों के चारित्र (Character) को सुरक्षित रखने की भावना रखने वाले माता-पिताओं से मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या उन्होंने कभी अपने बच्चों को चारित्र (Character) के बारे में समझाया / समझाते हैं। क्या आज पाठशाला/ विद्यालयों की अध्यापिकाएँ, स्कूल के टीचर्स और कोई माता-पिता बच्चों को प्रसंग आने पर या बच्चों के स्पष्ट रूप से पूछ लेने पर उन्हें चारित्र (Character)के बारे में समझाते हैं ? नहीं, वे कुशील पाप का प्रकरण आते ही बात टाल देते हैं। एक टीचर ने आकर मुझे कहा- माताजी! आज मेरे स्कूल में बुद्ध की शिक्षाओं में कुशील पाप का पाठ आया तो मैंने उसको छोड़ दिया। मात्र यह समझा दिया कि कुशील का अर्थ अब्रह्म होता है इसका अर्थ तुम जब बड़े हो जाओगे तब अपने आप समझ जाओगे। एक पाठशाला (जैन पाठशाला) की दीदी ने कहा- माताजी, एक दिन मैं बच्चों को पूजा करवा रही थी जब पुष्प चढ़ाने का नम्बर आया तो एक बच्चे ने पूछ लिया-दीदी, ये काम बाण क्या होते हैं, ये कैसे लगते हैं ? मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी। जब उसने फिर पूछा तो मैंने उसको डाट कर चुप कर दिया। एक महिला ने बताया माता जी एक दिन हम सब लोग टी.वी. देख रहे थे, टी.वी. पर एक अश्लील चित्र आया, मैंने बेटे से कहा बेटा टी. वी. बंद कर दो, बेटे ने कहा-मम्मी, टी. वी. बंद क्यों कर दूँ, क्या करेगा, यह अभी इसको जमीन पर पटकेगा (लेटायेगा) उससे पप्पी लेगा और चला जायेगा। ये कुछ घटनाएँ हैं। ऐसी अनेक घटनाएँ हमेशा होती रहती हैं। आपके पास इन सब प्रश्नों के क्या उत्तर हैं ? शायद आप यह सोचते होंगे कि ऐसी बातें बच्चों को क्या बताई जायें, वे जब बड़े होंगे तब अपने आप समझ जायेंगे। हमें तो ऐसी बातें समझाने में शरम आती है।

❑ **कुशील पाप कैसे समझायें** ?

कुशील शब्द का शाब्दिक अर्थ कु=खोटा, शील=आचरण, खोटा आचरण ही कुशील है यद्यपि इस कुशील शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है फिर भी यहाँ कुशील का भाव दुराचरण से लेना चाहिए अर्थात् चारित्र (Character) का हीन (If character is last every time is last ) होना, चारित्रहीनता होना ही कुशील है। वास्तव में शील ही जीवन का वह शृंगार है जिससे व्यक्ति बिना किसी शृंगार के भी सौन्दर्यवान लगता है अर्थात् हार, मुकुट, बाजूबन्ध, कड़े, पायल आदि सभी आभूषण तिलक के बिना शोभा नहीं देते हैं, उसी प्रकार त्याग आदि भी शील के बिना शोभा नहीं देते हैं। शील जीवन में आँखों के समान हैं जिसके बिना व्यक्ति सर्वांग सुन्दर होने पर भी सुन्दर नहीं लगता है। शील जीवन का प्राण है, जिनके बिना जीव जीवित मुर्दे के समान है। जिस शील के प्रभाव से सेठ सुदर्शन के शूली का सिंहासन बन गया, द्रौपदी का चीर बढ़ता ही गया। सती सीता के अग्नि का पानी बन गया। वही शील जब दूषित हो जाता है, कुत्सित हो जाता है, उसे कुशील पाप कहते हैं। आज हमारी नयी पीढ़ी नासमझी में अपने मूल्यवान शील रत्न को बिना किसी मूल्य के ही बेचकर जीवन भर के लिए पश्चाताप के आँसू बहा रही है अथवा भविष्य में आँसू बहाने पड़ेंगे ऐसे काम कर रही है। इसके साथ ही साथ आज के लड़के/ लड़कियाँ यह जानते ही नहीं हैं कि शील क्या है, कुशील क्या है?/ शील पालन से क्या लाभ है और कुशील पाप से क्या हानि है इसीलिए अल्पवय में ही दोनों (लड़के-लड़कियाँ) न जाति देखते हैं न धर्म और LOVE कर बैठते हैं, इसी को कुशील पाप कहते हैं।

उस कुशील का त्याग दो प्रकार से किया जा सकता है-

1. अपनी विवाहिता स्त्री (पत्नी) में संतोष रख करके।

2. सभी स्त्रियों में वासना का पूर्ण रूप से त्याग करके।

**ये दोनों ही पुण्य के कारण हैं और पूर्वोपार्जित पापों का क्षय करने वाले हैं।**

चूँकि यहाँ LOVE का प्रकरण मुख्य है इसलिए पूर्ण रूप से स्त्री के त्याग को गौण करके अपनी विवाहिता स्त्री/पत्नी में संतोष कैसे रखा जाता है? स्वस्त्री कौन होती है ? कैसे परस्त्री/परपुरुष का सम्पर्क हो जाने पर अपने आपको बचावें ? इन सब बातों पर यहाँ प्रकाश डाला जायेगा।

अपनी स्त्री/पत्नी का अर्थ-जिसके साथ माता-पिता आदि बुजुर्गों ने शादी करवायी है वह स्वपत्नी/अपनी पत्नी कहलाती है, प्राचीन समय में

बहुपत्नी प्रथा थी। जैसे-भरत चक्रवर्ती ने 96000 लड़कियों से शादी की थी, श्री रामचन्द्र जी ने 8000 लड़कियों से शादी की, इस प्रकार अनेक राजाओं ने अपने-अपने योग्य अनेक कन्याओं से विवाह किया तो भी उनको किसी ने गलत दृष्टि से नहीं देखा और न ही उनको नरकगति आदि दुर्गति में जाकर पाप रूप फल ही भोगना पड़ा। यद्यपि वर्तमान में सरकार भी इस प्रकार की अर्थात् बहु पत्नी रखने की परमीशन नहीं देती है और न आज का व्यक्ति इतना समर्थ है कि वह एक से अधिक पत्नियों को लालन-पालन कर पावे। वास्तव में आज के युग में एक पत्नी को सन्तुष्ट करना ही कठिन है तो अनेक पत्नियों को संतुष्ट करना....। फिर भी पूर्व पत्नी के वियोग हो जाने पर कोई किसी अन्य लड़की से विवाह करता है तो कोई दोष नहीं है लेकिन लड़की को एक लड़के से शादी करने की अनुमति है क्योंकि लड़की भोग्या (भोगने योग्य) है। भोग्य पदार्थ एक ही व्यक्ति के भोगने योग्य होता है। एक व्यक्ति के द्वारा भोग लिए जाने पर वह उच्छ्रिष्ट हो जाता है। उच्छ्रिष्ट पुनः किसी के भोगने योग्य नहीं होता है।

इधर रावण ने सीता के साथ भोग नहीं किया और न एक बार भी उसको स्पर्श ही कर पाया लेकिन सीता को गलत दृष्टि से देखा, उसको स्पर्श करने की, उससे अश्लीलता करने की भावना की उसका फल उसे इसी भव में अपयश पाकर और मृत्यु की गोद में सोना पड़ा और परभव में नरकगति जैसी दुर्गति मिली। क्योंकि सीता के साथ उसका विवाह नहीं हुआ था। वह श्रीराम की पत्नी थी। इसी प्रकार चन्दनबाला, अनन्तमती, अनंगसरा आदि की शादी किसी के साथ नहीं हुई थी लेकिन उनको बिना शादी किये राजा, सेठ, भील आदि पुरुषों ने स्पर्श ही करने का साहस किया तो नगर रक्षक देवों ने आकर उनकी पिटाई की और इन बालिकाओं के चरणों में क्षमा माँगने पर ही उनको छोड़ा। बिना शादी किये किसी लड़की को, अन्य से विवाहित स्त्री को, विधवा को, साध्वी को यहाँ तक गाय-भैंस, बकरी आदि तिर्यञ्च को भी गलत दृष्टि से स्पर्श करने की, उनके साथ भोग करने की भावना करना (पुरुष/लड़के की अपेक्षा) कुशील पाप है।

कोई लड़की यदि इसी प्रकार अविवाहित (जिसके साथ विवाह नहीं



हुआ है) लड़के के साथ गलत दृष्टि से स्पर्श करती है, स्पर्श करने की इच्छा करती है, उसके गुणों के प्रति गलत दृष्टि से प्रभावित होती है तो वह कुशील पाप है। उसको भी पुरुष के समान इस भव में अपयश और मृत्यु मिलती है और परभव में नरकों में अग्नि में तपा कर लाल किये गये लोहे के गोले से जबरदस्ती चिपटाया जाना आदि अनेक प्रकार सजाएँ भोगनी पड़ती है। सेठ सुदर्शन पर तीन बार स्त्रियाँ मोहित हो गईं थी। उन्होंने उनको गलत दृष्टि से स्पर्शादि करने का भाव किया। फलतः उनको मौत मिली। उनको भी सेठ के चरणों में क्षमा याचना करनी पड़ी। सेठ के भी शील के प्रभाव से देवों ने सूली का सिंहासन बना दिया।

❑ **महाराज छत्रसाल :**

महाराज छत्रसाल के गुणों से प्रभावित होकर एक युवती उनके पास पहुँची और बोली-महाराज! आप करुणा सागर हैं, आप अपनी प्रजा का पिता के समान पालन करते हैं, आप प्रजा के प्रत्येक दुःख को मिटाकर सुखी रखते हैं-रखना चाहते हैं। मैं भी बहुत दुःखी हूँ, कृपा करके आप मेरा भी एक दुःख दूर कर दीजिए। राजा ने कहा-हे युवती! कहो, तुम्हारा क्या दुःख है, मैं अवश्य ही तेरे दुःख को दूर करने की कोशिश करूँगा। युवती हिचकिचाती हुई बोली - महाराज! मेरे कोई पुत्र नहीं है, मुझे आप जैसा प्रतापी, सर्वगुणसम्पन्न एक पुत्र चाहिए वह मात्र आपसे ही मिल सकता है और किसी से नहीं। मैं इसीलिए आपसे एकान्त में मिलने की इच्छा लेकर आई थी, वह इच्छा आपने पूरी कर दी अर्थात् आपने मुझसे एकान्त में मिलना स्वीकार कर लिया अब आप मेरी पुत्र प्राप्ति की इच्छा भी पूरी कर दीजिए। कहने का अर्थ यह है कि आप मुझे भोगकर गर्भवती बना दीजिए। यह सब सुनकर महाराज छत्रसाल सन्न रह गये। वे विचार में पड़ गये कि अब क्या किया जाय। यदि मैं इसकी इच्छा पूरी करता हूँ तो मेरा धर्म नष्ट होता है और यदि नहीं करता हूँ तो मेरी प्रजा दुःखी रहती है जिसकी प्रजा दुःखी हो उस राजा से भी क्या ? फिर भी कुछ ऐसी युक्ति से कार्य करना चाहिए जिससे इस युवती की इच्छा भी पूरी हो जावे और मेरा धर्म भी नष्ट न हो। उन्होंने भगवान का स्मरण किया, पुण्य योग से उनको एक युक्ति सूझ गई। वे जल्दी से उठे और युवती के चरणों को स्पर्श

करते हुए बोले-हे युवती! आज से तुम मेरी माँ हो और मैं आपका पुत्र, आप मुझे पुत्र के योग्य आज्ञा दीजिए। मैं आपकी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार हूँ। अपने शील की रक्षा करने के कारण महाराजा छत्रशाल की गुण गाथा आज भी गाई जाती है।

कहने का भाव यह है कि लड़की/स्त्री का लड़के/पुरुष के साथ गलत दृष्टि से स्पर्श, हास-विलास, मिलना-जुलना, खाना-पीना, घूमना-खेलना आदि सभी कुशील पाप/व्यभिचार की कोटि में ही आता है।

2. आचार्य भगवन्तों का कहना तो यहाँ तक है कि यदि कोई लड़का-किसी विवाहित-अविवाहित लड़के का वासना से ग्रसित होकर स्पर्श करता है अंगों का घर्षण करता है वह भी एक कुशील पाप ही है। ऐसा कई जगह देखा भी जाता है। इसी प्रकार लड़की-स्त्री का लड़की-स्त्री के साथ गलत दृष्टि से स्पर्श करता आदि कुशील पाप ही है।

3. अकेला लड़का अथवा लड़की स्वयं वासना के वशीभूत होकर अपने ही अंगोपांग का स्पर्श करता है, वीर्यपात करता है, वह भी कुशील पाप में ही आता है इसे ही एक प्रकार से हस्तमैथुन कहते हैं।

स्थूल या बोलचाल की भाषा में इसे गुण्डा-गर्दी, आवारागर्दी या लोफरपना भी कहा जा सकता है। गुण्डा-गर्दी संसार के किसी भी कोने में अच्छी नहीं मानी गयी है। लोफर लोगों से लगभग सभी लोग डरते हैं। गुण्डा-गर्दी लड़के ही करते हों, ऐसी कोई बात नहीं है। लड़कियाँ भी लोफरपना कर सकती हैं फिर भी विशेष रूप से गुण्डा-गर्दी करने में पुरुष वर्ग और उनमें भी युवा पीढ़ी ही प्रसिद्ध है अर्थात् गुण्डा-गर्दी करती हुई युवा पीढ़ी ही देखी जाती है। फिर भी वृद्ध लोगों में गुण्डा-गर्दी का निषेध नहीं किया जा सकता है। कई वृद्ध जिनके घर में बीबी-बच्चे होते हुए भी बाहर की स्त्रियों की बात तो दूर अपनी बहू-बेटी, पोती तक के साथ उल्टे-सीधे काम करते हुए देखे जाते हैं। एक वृद्ध ने तो अपनी दुकान पर खेलने के लिए आई हुई ढ़ाई वर्ष की लड़की के साथ ही बलात्कार कर लिया।

एक दिन कुछ लड़कियाँ स्कूल जा रही थीं, रास्ता कुछ सूना था। वहीं रास्ते में उन्हें एक सफेद दाढ़ी वाला वृद्ध मिला। उसने एक पाँच-छह



वर्ष की लड़की से कहा-बेटा, इधर आओ, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो ऐसा कहते हुए उसे अपने हाथों में उठाकर मुँह पर पप्पी ले ली अर्थात् उसके गालों को प्रेम से चूम लिया। उसको कुछ अलग-सा अनुभव हुआ क्योंकि घर पर उसके दादा-दादी अंकल-भैया आदि दिन में बीसों बार पप्पी लेते रहते थे। दो-तीन दिन तक वह व्यक्ति उस बच्ची को हाथों में उठाकर पप्पी लेता रहा तो लड़की ने घर आकर अपने दादाजी से कहा-दादाजी, वो दादाजी (उनकी शक्ल-सूरत और स्थान बताते हुए) मेरे मुँह पर पप्पी लेते हैं, मुझे अच्छा नहीं लगता है आप उन्हें मना कर देना। आप पप्पी लेते हैं तो अच्छा लगता है लेकिन उनकी पप्पी तो मुझे बहुत खराब लगती है। यह भी एक कुशील पाप है स्पर्श करने के अभिप्राय में पाप और प्रेम होता है। किसी के प्रेम पूर्वक स्पर्श करने में गलत अनुभूति नहीं होती है जबकि वासनाप्रद स्पर्श को एक बच्चा भी समझ जाता है। ऐसे मूर्खों को तो रावण की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता है क्योंकि रावण ने तो इतने बलशाली तीन खण्ड के अधिपति होकर भी सती सीता के साथ बलात्कार नहीं किया था। खैर,यहाँ प्रकरण चल रहा है कुशील पाप क्या है अर्थात् कुशील पाप/गुण्डागर्दी या लोफरपना किसे कहते हैं?

❑ **गुण्डागर्दी क्या है ? :**

लड़कों की अपेक्षा अर्थात् लड़के की कौन सी करतूतें गुण्डा गर्दी में आती हैं -

1. चलते-चलते लड़कियों का दुपट्टा खींच लेना, उनके सीने आदि का स्पर्श कर लेना।
2. लड़कियों को देखकर अश्लील (पति-पत्नि के प्यार सम्बन्धी) गाने गाना।
3. लड़कियों को देखकर यद्वा-तद्वा, बिना प्रयोजन बोलना, अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सीटी बजाना आदि।
4. लड़कियों के निकलने का समय होने पर रास्ते में या होटल, पान की दुकान, चौराहे आदि पर खड़े होकर हँसी-मजाक, ठट्ठा आदि करना।
5. लड़कियों के पीछे लग जाना अर्थात् जिस रास्ते से लड़की जा रही है उसी रास्ते से जाना।

6. जबरन लड़कियों को खाने-पीने की चीज या पेन-पेन्सिल, पुस्तक आदि देना।
7. अनावश्यक या आवश्यकता होने पर भी बार-बार फोन-मोबाइल आदि करना और फोन पर भी लड़की से बात करने की चेष्टा करना।
8. लड़कियों या स्त्रियों को देखकर लघुशंका करने बैठ जाना, मुख्य कपड़े (पेंट, शर्ट आदि) खोल देना अर्थात् अकेली पेंटी आदि पहने रहना।
9. लड़कियों पर दृष्टि लगाकर उनके आने-जाने के समय में रास्ते, आजू-बाजू में छुपकर बैठ जाना।
10. लड़कियों को देख/लड़कियों के बीच में पेंटी को बार-बार छूना।
11. अनावश्यक पत्र-चिट्ठी आदि लिखकर लड़कियों को पकड़ा देना आदि सब पुरुषों द्वारा की गई प्रारम्भिक गुण्डागर्दी है।

इसी प्रकार लड़कियाँ भी विशेष क्रियाएँ करके पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित कर सकती हैं -

1. पुरुषों को देखकर आँख मारना, कटाक्ष करना।
2. नव जवानों को सामने देख अपने गुप्त अंगोपांगों को दिखाना।
3. सड़क पर जाते आदमियों को देखकर सीटी बजाना, चुटकी बजाना आदि।
4. लड़कों को आकर्षित करने वाली विशेष वेषभूषा, साज-श्रृंगार करना।

- **एक बच्ची की घटना :**

एक दिन मैंने लगभग दस वर्ष की लड़की से पूछा-बेटी! तुम पाठशाला में पढ़ती हो बताओ कुशील पाप किसे कहते हैं? उसने कहा- परनारी को बुरी नजर से देखना कुशील पाप है।

मैंने पूछा-परस्त्री कौन होती है?

बच्ची-जैसे पापा ने मम्मी से शादी कर ली तो वह उनके लिए अपनी स्त्री हो गई और इसी प्रकार मम्मी ने पापा से शादी कर ली तो वे उसके लिए अपने (अपना) पुरुष हो गये बाकी....।

मैंने कहा-तो क्या अपने गुरुजी (आचार्यश्री, मुनि महाराज आदि)



भी मम्मी के लिए पर-पुरुष हैं?

बच्ची-नहीं, नहीं, वो तो अपने ही गुरुजी है परपुरुष कैसे हो सकते हैं?

मैंने कहा-तो क्या तेरे चाचाजी पर पुरुष हैं, तेरे मामा, मौसा, फूफा आदि परपुरुष हैं?

बच्ची- नहीं.....।

मैंने कहा- क्या तेरी बुआ, दादी आदि तेरे पापा के लिए परस्त्री है?

बच्ची- नहीं, दादी तो उनकी माँ है, बुआ उनकी बहिन है....।

मैंने कहा- क्या, तेरी चाची, बड़ी मम्मी आदि परस्त्री हैं।

बच्ची- नहीं.........।

आखिर वह हार गई। उसने अपनी समझ से कई तर्क दिये। लेकिन उसे खुद समझ में नहीं आ पा रहा था कि कुशील पाप कहते किसे हैं? क्या अपने गुरु भी कभी परपुरुष हो सकते हैं? क्या अपनी दादी-चाची भी परस्त्री हो सकती हैं.....।

उसने कहा- माताजी, आप ही बताइये कुशील पाप किसे कहते हैं? परस्त्री क्या होती है? कौन होती है? जिसके साथ बेटी, बहिन और माँ का व्यवहार करें और परपुरुष कौन होते हैं जिन्हें माता-पिता, भैया समझना चाहिए।

मैंने कहा-सुनो, जिसकी जिसके साथ शादी हो जाती है वह उसके लिए अपना पुरुष या अपनी स्त्री अर्थात् स्त्री के लिए अपना पुरुष और पुरुष के लिए अपनी स्त्री होती है। जैसे-रामचन्द्र जी की सीता से शादी हो गयी, सीता के लिए तब रामचन्द्र को छोड़कर शेष लक्ष्मण, भरत, उसके पिता जनक, उसके पुत्र लवणांकुश, रामचन्द्र के भक्त हनुमान, सुडील आदि वानर सेना तथा उनके मित्र सुग्रीव, वज्रकर्ण आदि सभी पुरुष वर्ग उसके (सीता के) लिए परपुरुष थे तथा सीता को छोड़कर अथवा जिन लड़कियों के साथ रामचन्द्र की शादी हो गयी। होने वाली थी या जब तक शादी नहीं हुई तब तक शेष सभी स्त्रियाँ/लड़कियाँ उनके लिए परस्त्री थीं। इसी प्रकार रावण की मन्दोदरी आदि पत्नियाँ, व्रत ली हुई ब्रह्मचारिणियाँ, सीता की सखियाँ आदि सभी स्त्रियाँ परस्त्री कहलाईं। यहाँ तक की रामचन्द्र की माता कौशल्या, कैकई, सुमित्रा

आदि भी परस्त्री ही कहलाई। कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री अपने पति को छोड़कर अपने बराबरी वाले को अर्थात् सम उम्र वाले को भाई, अपने से बड़े को पिता तथा अपने से छोटे को पुत्र के समान समझे इसमें विश्व के सभी पुरुष आ गये। इसी प्रकार पुरुष भी अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़कर अपनी बराबरी की स्त्री को बहिन, छोटी को बेटी तथा बड़ी को माता के समान देखे। इसलिए तुम्हारी मम्मी तेरे पापा को छोड़कर किसी को भी गलत दृष्टि से नहीं देख सकती.....। यही ब्रह्मचर्य धर्म है और ऐसा कर लेना कुशील पाप है और सुनो अभी तेरी शादी नहीं हुई है इसलिए जब तक तुम्हारी शादी नहीं हो जाती तब तक के लिए सभी पुरुष तुम्हारे लिए भाई और पिता के समान हैं तथा शादी होने के बाद तुम्हारे पति को छोड़कर शेष सभी परपुरुष होंगे। अध्यापक, पाठशाला की दीदियाँ, माता-पिता, दादा-दादी आदि यदि बच्चों को अच्छी तरह कुशील पाप का लक्षण समझा दे तो शायद लड़के-लड़कियों के भागने की परम्परा में काफी सुधार आ सकता है। अर्थात् बच्चे कुशील पाप से बच सकते हैं।

❑ **कुशील को पाप क्यों कहते हैं ? :**

कुशील का अर्थ विशेष रूप से खोटे आचरण से जुड़ा हुआ है। खोटा आचरण निश्चित रूप से दूसरों को दुःख देने वाला होता है। जहाँ दूसरे को पीड़ा होती है वहाँ पाप अवश्य होता है। जो पाप करता है उसको दुर्गति में जाकर उनका फल अवश्य भोगना पड़ता है। कुशील/व्यभिचार करते समय किसी की बहू-बेटी, बहिन के साथ गलत काम होता है। उसके (बहू आदि के साथ) गलत काम करने पर वह स्वयं तथा उसके संरक्षक दुःखी होते हैं। क्रोधित होकर उसको (गलत काम करने वाले को) मारते हैं। यहाँ तक कोई-कोई तो उसकी जान ही ले लेते हैं। यदि कुशील, पाप नहीं होता तो क्यों लड़की के संरक्षक लड़की के साथ गलत काम करने वाले को मारते, क्यों दुनियाँ उसको हीन दृष्टि से देखती, क्यों दण्डित करती और फिर यह गलत काम नहीं है तो कुशील पाप करने वाले सबसे छुपकर क्यों सम्पर्क करते हैं क्यों यह पाप करते समय दिल में धक्-धक् लगी रहती है, क्यों यह पाप करते



समय यह भय लगा रहता है कि कहीं कोई देख न ले, कोई देख तो नहीं रहा है, कहीं कोई देख लेगा तो क्या होगा? क्यों कुशीलवान/व्यभिचारी किसी के देख लेने पर तत्काल आँख चुराकर भागने की कोशिश करता है? क्यों इस काम को करने वाले के अन्दर से यह आवाज आती है। हे आत्मन्! यह दुष्कृत मत कर, यह गलत है मत कर-मत कर........।

दूसरी बात जब स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के साथ भोग करते हैं तो स्त्री की योनि में स्थित करोड़ों-अरबों जीव उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार किसी तिली से भरी नली में गरम लोहे की सलाई डालने पर पूरे तिल नष्ट हो जाते हैं /जल जाते हैं। अतः असंख्यात जीवों की हिंसा जिसमें होती है ऐसे इस कार्य को पाप कहना किसी भी अपेक्षा अनुचित नहीं है। पूर्व में बताया जा चुका है कि कुशील पाप करने वाले के जीवन में पाँच पाप और क्रोधादि सभी कषायें सहज रूप से आ जाती हैं। जबकि हिंसा करने वाले, झूठ बोलने वाले,चोरी करने वाले, कुशील पाप करे या न भी करे। लेकिन कुशील पाप करने वाले को तो सब पाप करने ही पड़ते हैं।

तीसरी बात कुशील यदि पाप नहीं होता तो क्यों पुराण ग्रन्थों में ऐतिहासिक पुरुषों ने इस पाप का फल नरक-निगोद आदि दुर्गतियों में जाकर दुःख भोगना बताया है क्यों व्यभिचार का भाव मात्र करने वाले रावण की आज तक लोग निन्दा करते हैं, क्यों कुशील पाप करने वाली स्त्री को कुलटा, व्यभिचारिणी, वेश्या, दुष्चरित्रा, कुल कलंकिनी तथा ऐसे पुरुष को जार पुरुष, व्यभिचारी, दुष्ट,चरित्रहीन, लुच्चा, लफंगा, आदि खोटे शब्दों से सम्बोधित किया जाता है।

चौथी बात किसी भी शास्त्र में, किसी भी धर्म में, किसी भी महापुरुष ने इसे अच्छा काम नहीं बताया है तथा कोई भी सज्जन, सदाचारी, धर्मात्मा जीव चाहे वह तिर्यञ्च भी क्यों न हो यह काम करना अच्छा नहीं मानते हैं/ नहीं करते हैं।

इन सब पहलुओं पर विचार करने पर स्पष्ट है कि कुशील पाप ही नहीं महापाप है, सबसे बड़ा पाप है सब पापों का बादशाह है।

**4. टी.वी. पर अश्लील कार्यक्रम देखने से :**

व्यक्ति के मन में टी.वी. पर अश्लील चित्रों को देखकर सहज रूप से वासनाएँ जागृत होती हैं, जिस प्रकार वीरता के चित्र देखकर वीरता, करुणक्रन्दन को सुनकर करुणा रस उमड़ता है, हँसते हुए को देखकर हँसी आ ही जाती है। उसी प्रकार अश्लील चित्र को देखकर अश्लीलता के भाव उत्पन्न हो जावे तो कोई आश्चर्य नहीं है। कई घरों में माता-पिता के अनुशासित नहीं होने के कारण उनके बच्चे रात में 10-11 बजे के बाद जब सब सो जाते हैं, तब वे टी.वी. खोलकर ब्लू फिल्म देखना शुरु करते हैं। कई घरों में ऐसी-ऐसी सीडियाँ रखी रहती हैं जिनमें केवल पति-पत्नी सम्बन्धी अश्लीलता के चित्र होते हैं, पति-पत्नी सम्बन्धी गुप्त क्रियायें जिनमें प्रकट रूप से दिखाई जाती हैं। आप स्वयं सोचें क्या ऐसे चित्रों को देखने वाले बच्चों के मन में कामोद्रेक नहीं होगा, क्या उन चित्रों को देखकर उनमें वैसी क्रियाएँ करने का मन नहीं होगा, क्या ऐसी सीडियों को देखते हुए वे कुशील पाप से बच सकते हैं ? नहीं, आप कभी कल्पना ही मत करना कि आप इतने प्रमादी बने रहे और आपके बच्चे कुशील पाप से बच जावें। कई स्थानों पर सुना जाता है कि रात्रि में 12 बजे टी.वी. देखते-देखते भाई-बहिन ने वैसी ही क्रियाएँ कर लीं और माता-पिता को कुछ पता ही नहीं था लेकिन जब लड़की ने अपनी तकलीफ बताई तब समझ में आया कि हमारी लापरवाही का ही यह दुष्परिणाम है जैसे आकाश में उड़ना, आतंकवादियों जैसा छुरा-चाकू चलाना आदि क्रियाएँ सीख गये। उनका प्रेक्टिकल करने लग गये तो टी.वी. देखकर दुष्कर्म करना सीख ले तो कोई अचरज नहीं है। इसलिए आप सावधान रहें। बच्चों को शिक्षाप्रद कार्यक्रम दिखावें लेकिन उसमें भी लिमिट जरूर रखें।

अभी कुछ दिन पहले ही सुना था एक युगल के बेटे-बेटी बचपन से ही ये (गलत काम) काम कर रहे थे। अन्धे माता-पिता को वर्षों से एक घर में रहते हुए भी कुछ पता नहीं था। जब शादी का प्रसंग आया तब बच्चों ने कहा हम एक-दूसरे के बिना एक दिन भी नहीं रह सकते है फिर शादी करके जिन्दगी भर कैसे किसी दूसरे के साथ रह सकेंगे। मम्मी-पापा ने जब इसका (एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकने का) कारण पूछा तो उन्होंने कहा- हम



तो बहुत छोटेपन से ही पति-पत्नि सम्बन्धी भोग करते आ रहे हैं। हमने तो जब से टी.वी. पर ऐसा देखा था तभी.....। मैंने जब यह घटना सुनी तो ऐसा लगा.... सच में क्या ऐसे माता-पिता के बच्चे कभी शील का पालन कर सकते हैं.....? आप सावधान रहें, अपने एवं अपने बच्चों के जीवन को सही मार्ग पर चलाकर सद्गति को प्राप्त हों, शीलवान बनें, कुशील से बचें।

**5. माता-पिता का कहना नहीं मानने से :**

कई मोही माता-पिता अपने बच्चों को इतने लाड़-प्यार से रखते हैं कि बच्चे हठीले हो जाते हैं। वे इतने जिद्दी स्वभाव वाले हो जाते हैं कि उनको अनेक बार समझाने पर भी, कभी-कभी तो दण्डित अर्थात् पिटाई कर देने पर भी वे माता-पिता की बात नहीं मानते हैं अपनी मनमानी ही करते रहते हैं। मनमानी करने से वह किसके चक्कर में कब फँस जाते हैं ? कैसे फँस जाते हैं? वे स्वयं तो समझ नहीं पाते और दूसरे की बात सुनने को वे तैयार नहीं होते फलतः उनका जीवन बर्बाद हो जाता है।

एक छोटे गाँव में एक दम्पति की कुल मिलाकर एक संतान लड़की के रूप में थी। लड़की के पिता उसे बहुत प्यार से रखते थे। उसकी माँ भी उसे बहुत चाहती थी वह यह भी चाहती थी कि उसकी बेटी एक सभ्य, सदाचारी, कुलीन बने। लेकिन पति के आगे उसकी कुछ चलती ही नहीं थी। पिता के प्यार के कारण बेटी माँ की बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती थी। वह एक आवारा लड़के से बोलती, मजाक करती तो लड़का भी उसके लिए कभी चॉकलेट लाता, कभी कंगन लाकर देता तो कभी कपड़े लाकर देता। लड़का-लड़की की हाँ में हाँ मिलाता, उसकी प्रशंसा करता, हर समय उसका पक्ष लेता था, इससे लड़की समझने लगी कि ये लड़का ही मेरा हितैषी है माता-पिता भी मेरा हित करने वाले नहीं हैं, यही सोच-सोचकर वह माता-पिता से भी चिढ़ने लगी। धीरे-धीरे लड़का-लड़की को अपने भविष्य की कल्पनाओं के सपने दिखाने लगा, वह उसको अपनी रानी बनाने का प्रलोभन देने लगा। लड़की उसके प्रेम में पागल हो गई। कई बार लड़का रात्रि तक में उसके घर आने लगा। यह सब देखकर भी लड़की की हठ के कारण उसके माता-पिता कुछ नहीं कर पाये। एक दिन लड़की ने लड़के के प्यार में पागल होकर कब अपना

सब कुछ लुटा दिया कि उसे स्वयं भी पता नहीं चल पाया। वह लड़के के साथ गाँव से शहर भाग गई। लड़के ने शहर में ले जाकर एक अरब शेख जो कि वेश्यावृत्ति करवाता था, बेच दिया। वह एक माँस के टुकड़े की भाँति हो गई। कई लोग उसके यहाँ आते-जाते, उसके साथ व्यभिचार करते और चले जाते। वह मात्र अपने भाग्य पर रोती और माँ का कहना नहीं माना था, इसलिए पछताती लेकिन.....।

आप छोटी बच्ची हैं ना समझ हैं यदि आप किसी से LOVE कर रही हैं या चाह रही हैं या आप LOVE कर भी नहीं रही हैं, लेकिन आपके मम्मी-पापा, भैया-अंकल आदि को आपके व्यवहार से यह समझ में आ रहा है कि आप ऐसा करते-करते भविष्य में इस लड़के के चक्कर में फँस जायेंगी, आपका यह प्रेम/मित्रता LOVE में परिवर्तित हो जायेगा। यही सोचकर यदि वे आपको उसके साथ बोलने-बैठने हँसने के लिए मना करते हैं तो उसका अन्यथा अर्थ नहीं लें। आप यह नहीं सोचें कि मम्मी-पापा क्यों मुझे इससे बोलने के लिए मना करते हैं, क्या मैं इसके साथ भाग रही हूँ, क्या मैं इससे बोलकर कुछ गलत काम कर रही हूँ आदि-आदि खोटी कल्पनाएँ करके बड़ों की बात नहीं टालें, वे जो कुछ कह रहे हैं उस पर ध्यान दें। आपका जीवन उपर्युक्त लड़की जैसा पतित/दुःखी नहीं बनेगा।

- **क्या LOVE के लिए स्थानादि आवश्यक है ? :**

LOVE के लिए कोई स्कूल के साथी हो ऐसा कोई नियम नहीं है LOVE तो आस-पड़ोस के किसी लड़के से अथवा एक छोटे ठेले वाले से भी हो सकता है। LOVE के लिए कोई रूप, सुन्दरता या शारीरिक सुडौलता भी आवश्यक नहीं है। LOVE तो काले, कुबड़े, लूले-लंगड़े आदि किसी से भी हो सकता है। एक नौकर से या अपने पास पढ़ने आने वाले विद्यार्थी से भी LOVE हो सकता है तो किसी सुन्दर, धनाढ्य, समर्थ लड़के से भी LOVE हो सकता है। क्योंकि LOVE का आधार शरीर नहीं, मन होता है, वासनाएँ होती हैं। इसी प्रकार किसी सुन्दर लड़की से ही LOVE हो ऐसा कुछ नहीं है LOVE तो काली-कलूटी, गरीब-अमीर, वृद्ध-जवान-बच्ची किसी से भी हो सकता है। एक सत्तरह वर्ष के लड़के ने एक सैंतालिस वर्ष की उम्र वाली



महिला से LOVE किया / शादी की। राजा यशोधर की पट्टरानी अमृतमती को एक हाथी के महावत से LOVE हो गया था। जिसके पास पहनने के लिए साफ लंगोटी तक नहीं थी वह तो हाथी की मालिश के बाद पौंछे गये कपड़े की लंगोटी पहनता था, हाथी के खाने के बाद बची हुई घास के बिस्तर पर सोता था, काला था, उसकी पीठ पर कूबड़ निकली हुई थी, उसकी नाक चपटी थी, जैसे ही वह उसके पास जाती थी वह उसकी चोटी पकड़कर हाथी को वश में करने के अंकुश से मारता था। फिर भी वह मूर्खा उससे LOVE करती थी। एक स्थान पर एक लखपति सेठ की बेटी ने एक चाट बेचने वाले लड़के से LOVE कर लिया और दस हजार रुपये लेकर उसके साथ भाग गई। जब खा-पीकर के, पिक्चर देखकर, होटल आदि में घूमने के बाद जेब खाली हुई तो दोनों वापस लौटे तो उस लड़की के पापा को ऐसा गुस्सा आया कि उन्होंने कुछ सोचे-समझे बिना ही एक लड़के के साथ मात्र 15-16 वर्ष की उम्र में ही शादी कर दी। अब वह अपने ससुराल में भी कुछ शिकायत नहीं कर सकती क्योंकि शिकायत करने के साथ ही साथ उसको सास-ननद के तानों-वानों की बरसात शुरु हो जाती थी और पीहर में तो वह कुछ कहने का अधिकार सा ही नहीं रखती थी क्योंकि उसने काम ही ऐसा किया था, जिससे वह कुछ कहने का साहस ही नहीं कर सकती थी। कहने का मतलब यह है कि उसे घुट-घुट कर अपनी जिन्दगी जीना पड़ रही है।

- **आश्चर्य तब होता है जब :**

LOVE तो आठ-पन्द्रह दिन के लिए मामा-मौसी, बुआ आदि के यहाँ गये बच्चों का भी अर्थात् ननिहाल आदि के अड़ोस-पड़ोस आदि से भी हो सकता है। सबसे बड़ा दुःख तो तब होता है जब बच्चे गुरुओं के दर्शन करने जाते हैं, उनकी सत्संगति से अपने आपको संस्कारित करने जाते हैं, उनके मम्मी-पापा उन्हें वहाँ निश्चिन्त होकर भेज भी देते हैं, वहाँ पर भी जब वे किसी के चक्कर में फँस जाते हैं अथवा धार्मिक अनुष्ठानों के समय अर्थात् व्रत-उपवास विशेष पर्व आदि के दिनों में जहाँ अनन्त पापों का क्षय किया जा सकता है या जहाँ अनन्त पापों का प्रक्षालन करने के लिए ही जाया जाता है ऐसे मंदिर, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र आदि स्थानों पर भी जब मैं सुनती हूँ कि

'' वहाँ गये थे तबसे इनकी चलती है'' तब से इनका सम्पर्क, फोन आदि से होता रहता है। मतलब वहीं से इनका LOVE प्रारम्भ हुआ है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसा लगता है हाय, इन अज्ञानी, नादान भोले बच्चों ने ये क्या कर लिया। इन्होंने तो मानों जिस औषधि के माध्यम से प्राणों की रक्षा हो रही थी उसी के साथ अपथ्य का सेवन करके मृत्यु की गोद में सो गये। जिस अग्नि पर पकाया गया भोजन खाकर जी रहे थे। उसी अग्नि में कूद कर मर गये.......। अहो, इन्होंने प्रभु/गुरु के चरणों में आने का बहाना बनाकर इतना निकृष्ट कार्य कर लिया। जिसका राज खुलने की भी शंका बनी रहती है, जिसके प्रकट होने पर इनके माता-पिता को सिर नीचा करना पड़ेगा। जिसके प्रकट होने पर कुल कलंकित हो जायेगा। युगों-युगों तक इनके दुष्कृत्य की आलोचना की जायेगी/भर्त्सना की जायेगी, इनके कृत्यों पर थूका जायेगा। अहो, ये जहाँ जाकर इस संसार सागर को पार कर सकते हैं। वहीं जाकर इन्होंने संसार भ्रमण को बढ़ा लिया। जिसकी संगति करके सद्गति प्राप्त करनी थी वहीं दु:संगति में फँसकर दुर्गति को प्राप्त होंगे।

LOVE के लिए कोई वय की आवश्यकता भी नहीं होती, कहीं-कहीं तो पन्द्रह और पैंतीस अथवा पचास वर्ष वालों का भी LOVE हो जाता है। कोई-कोई अधिक उम्र वाली लड़कियाँ भी कम उम्र वाले लड़के से LOVE करती हुई देखी जाती हैं।

LOVE तो एक दिन के सफर के समय बस, गाड़ी, ऑटो, रिक्शा आदि में दस-बीस मिनट के लिए साथ रहने पर भी हो सकता है। LOVE होने का मूल कारण तो मन का असंयम/चंचल होना, पाप भीरुता का अभाव है। अथवा LOVE का कारण अज्ञानता/भोलापन है अर्थात् किस समय / किस स्थान पर कैसी चेष्टा, बातचीत आदि करने का फल क्या होगा, इस बात की जानकारी का अभाव है।

LOVE के लिए लड़के-लड़की का एक दूसरे से परिचित होना या एक दूसरे को देखा हुआ होना भी आवश्यक नहीं है। परोक्ष में मोबाइल, फोन, ई-मेल आदि के माध्यम से भी परिचय बढ़ जाने पर LOVE हो सकता है। किसी विशेष रिस्तेदार, मित्र, साधु-सन्त को बीच में लेकर भी परिचय बढ़ाया



जा सकता है और LOVE की खाई में कूदा जा सकता है। ये कुछ उदाहरण हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि जिसको LOVE करना ही है या जिसको LOVE से होने वाली हानियों का ज्ञान नहीं है, जिसको LOVE से होने वाले पर भव के दु:खों का ख्याल ही नहीं है, जो यह जानता ही नहीं है कि LOVE का प्रारम्भ कैसे होता हैं एवं LOVE किस प्रकार बढ़ सकता है ? जिसने कभी यह विचार ही नहीं किया है कि इस कुशील/अब्रह्म, पाप/दुराचार से कैसे बचा जा सकता है ? उसके जीवन में/जीवन की अन्तिम घड़ियों तक कभी भी LOVE हो सकता है वह नर बनकर नारायण बनने के स्थान पर नरक-निगोदों में जा सकता है। **भगवान् सबको इस पाप से बचावे**, सबका जीवन नर से नारायण बनने के पथ पर बढ़े। अस्तु!

- **क्या वासना के लिए उम्र होती है :**

लगभग दस-बारह वर्ष की उम्र में बच्चों में LOVE की भावनाएँ उत्पन्न होने लगती हैं। लड़की में मासिक धर्म (M.C.) के समय से लगभग सत्रह-अठारह दिन तक विशेष रूप से पुरुषों की तरफ आकर्षण बढ़ता है। मासिक धर्म के समय में पुरुषों को देखना, उनसे मिलना, बोलना, उनसे मजाक करना आदि क्रियाओं में रुचि बढ़ती है। T.V. पर भी पुरुष के चित्रों को देखना, HERO के पार्ट को देखने में अभिरुचि होना इसके चिह्न हैं। इसी प्रकार लड़कों में भी लड़कियों की तरफ आकर्षण बढ़ना, अश्लील उपन्यास, पुस्तक आदि पढ़ने में रुचि बढ़ना इसका चिह्न माना जा सकता है। पुराने जमाने में भले ही जब तक पन्द्रह-सत्रह वर्ष की लड़की नहीं हो जाती थी, ससुराल नहीं भेजते थे, लेकिन शादी तो M.C. होने के पहले या M.C. होने की उम्र आते-आते कर देते थे, जिससे लड़के-लड़कियाँ सन्तुष्ट रहते थे, उनका मन इधर-उधर आकर्षित नहीं होता था, क्योंकि उनका मन जिससे शादी हो जाती थी उसी में स्थिर रहता था। आज यद्यपि वो जमाना नहीं है कि इतनी छोटी उम्र में शादी कर दी जाय और इतनी छोटी उम्र में शादी करना उचित भी नहीं है क्योंकि जब तक बच्चे शादी क्या है ? पति-पत्नि क्या होते हैं? पति-पत्नि को कैसे रहना चाहिए ? आदि बातों को नहीं समझ जायें तब तक उनकी शादी का कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। फिर छोटी उम्र से ही वासना पूर्ति का

साधन मिल जाने से शरीर के मूल तत्त्व वीर्य का नाश होने लगता है। वीर्य को ऊर्ध्वगामी बनाने की क्षमताओं का विकास नहीं हो पाता है। वीर्य नाश होने से वृद्धावस्था आने के पहले ही शरीर जीर्ण होने लगता है/ हो जाता है। शरीर शीर्ण होने से यौवन अवस्था में जो युवक-युवतियों में प्रतिभाएँ उभरनी चाहिए, जो विशेष कार्य करने चाहिए वे नहीं हो पाते हैं। दूसरी बात अल्प उम्र में ही संतान हो जाने से माँ न उसका पालन-पोषण सही ढंग से कर पाती है और न ही बच्चे को अच्छे संस्कारों से संस्कारित कर पाती है इसलिए बालविवाह किसी भी अपेक्षा से उचित नहीं है। वर्तमान युग ने यद्यपि इसमें बहुत कुछ संशोधन किया है अब बालविवाह की परम्परा लगभग बन्द सी हो गई, लेकिन उसके स्थान पर एक ऐसी खोटी / नासमझी की परम्परा माता-पिता के स्थान पर बच्चों ने चला दी है वह है बारह-तेरह वर्ष की उम्र में ही लड़के-लड़की का सम्पर्क बढ़ना और अठारह-उन्नीस वर्ष की उम्र में दोनों का भाग जाना।

एक गाँव में एक बहू बाईस-तेईस वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गई। उसके सास-ससुर आदि ने यह सोचकर कि कहीं बहू अकेली रात में डर नहीं जावे, अपने बड़े बेटे के दस-ग्यारह साल के बेटे को बहू के पास अर्थात् चाची के पास सोने के लिए कह दिया। वह लड़का रोज चाची के कमरे में ही सोता था। बेटा पलंग पर और चाची जमीन में बिस्तर बिछाकर सोती थी। कुछ ही दिनों के बाद एक दिन लड़का और चाची दोनों सो चुके थे। चाची को नींद नहीं आ रही थी लेकिन यह बात वह लड़का सोच भी नहीं पाया कि चाची अभी तक नहीं सोई है। उसने कमरे में जो नाइट बल्ब जल रहा था बन्द कर दिया। अचानक लाइट बन्द करते देख चाची ने सोचा कुछ न कुछ दाल में काला जरूर होना चाहिए। वह जल्दी से उठी और बाहर जाकर लड़के के मम्मी-पापा, दादा-दादी आदि को बताया। सब लोग उसकी झेंपने की स्थिति को देखकर समझ गये थे कि इसके मन में चाची के प्रति गलत भाव उत्पन्न हो गया है। मेरे अनुमान से वह लड़का यह जानता भी नहीं होगा कि वासना क्या होती है या वह जो भी चाची के साथ करता वह सही काम नहीं है फिर भी उसने ऐसा क्यों किया आप स्वयं सोचें। अतः यह स्पष्ट अनुभव में आता है कि वासना के लिए समझदारी की उम्र ही हो यह कोई आवश्यक नहीं है।



## ❑ LOVE का आरम्भ कैसे होता है ? :

**1.** वर्तमान में लड़के और लड़कियों के एक साथ स्कूल होते हैं। उनमें लड़के और लड़कियों का सहज रूप से सम्पर्क होता रहता है। लड़कियाँ लड़कों को अपना फ्रेन्ड बनाने के लिए उत्सुक रहती हैं और लड़के लड़कियों से मित्रता करने की इच्छा रखते हैं तथा मित्रता करते भी हैं। यही मित्रता LOVE की प्रारम्भिक स्थिति कही जा सकती है। यद्यपि हर लड़के-लड़की की मित्रता LOVE के रूप में परिवर्तित नहीं होती क्योंकि एक-दूसरे का साथ छूट जाने पर, माता-पिता के अनुशासन के कारण, पाप भीरुता, लोक लज्जा, कुल में कलंक लगने की संभावना आदि विचार दिमाग में उत्पन्न हो जाने पर मित्रता चलते रहने पर भी साधु की संगति, बचपन से माता-पिता आदि के द्वारा दिये गये संस्कारों के कारण LOVE में परिवर्तित नहीं होती है लेकिन जिनके पास उपर्युक्त सम्बल नहीं है, उनकी मित्रता LOVE में बदल कर लड़के और लड़की दोनों के जीवन में एक ऐसा कलंक लगा देती हैं, अन्दर में एक ऐसा विकल्प उत्पन्न कर देती हैं जो अन्तिम क्षणों तक भी चुभता रहता है जिसे न किसी से कहा जा सकता है और न ही समाधान किया जा सकता है। यह मित्रता यदि आगे बढ़कर LOVE को प्राप्त हो जाती है तो वह LOVE का अर्थात् व्यभिचार/कुशील पाप का प्रथम कदम कहलाता है।

**2.** दूसरे कदम में लड़के-लड़की का एक-दूसरे को देखने का मन होता है मन में ऐसा लगता है कि दिन रात उसी से बातें करती रहूँ। इसी के पास बैठकर खाऊँ, इसी को देखती रहूँ आदि-आदि भावनाएँ होती हैं क्लास में तथा क्लास की छुट्टी आदि के समय या लघुशंका आदि का बहाना बनाकर वे एक-दूसरे से मिलने/देखने लगते हैं। इस समय भी दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण तो रहता है लेकिन वासना की गंध होते हुए भी समझ में नहीं आती है। यही दूसरा कदम है।

**3**. तीसरे कदम में वे मित्र (लड़के-लड़की) जिसके पास जितनी और जैसी सक्षमता होती है उतनी एक-दूसरे की सहायता करने लगते हैं अर्थात् कॉपी, पेन, पुस्तक, गाइड आदि पढ़ने-लिखने की वस्तुओं का देना प्रारम्भ होता है उसके बाद खाने-पीने की चीजें भी देने लगते हैं। यद्यपि अपने

क्लास फेलों की अथवा किसी गरीब बच्चे की सहायता करना कोई बुरी बात नहीं है यह तो एक परोपकार है, दया का परिणाम है लेकिन किसी लड़की विशेष का लड़के विशेष की या लड़के विशेष का लड़की विशेष की सहायता करना वासना का प्रतीक है यही तृतीय चरण है। जिसके अन्दर किसी की सहायता करने की भावना होती है वह तो हर गरीब की, जिसको भी आवश्यकता होती है उनकी सहायता करते हैं। लेकिन उस सहायता से न पुण्य का बन्ध होता है और न ही लोक-प्रतिष्ठा मिलती है।

**4.** चतुर्थ कदम में लड़के-लड़कियों का छुपकर कहीं (घूमने जाना, होटल में जाना, सिनेमा देखने) जाना-आना आदि प्रारम्भ हो जाता है, ऐसे समय में जब कोई जाकर माता-पिता से शिकायत करता है तब यदि माता-पिता अपनी बेटी/बेटे का पक्ष ले लेते हैं। शिकायत करने वाले को डॉट देते हैं। कह देते हैं नहीं तुम गलत-फहमी में हो, मेरी बेटी/बेटा ऐसा नहीं हो सकती या तुम्हें क्या करना है ? तुम्हें मेरी बेटी/बेटे के बारे में कुछ कहने का क्या अधिकार है? आदि-आदि कहकर अपने बच्चों का पक्ष ले लेते हैं तो बच्चे के हौसले बढ़ने लगते हैं बच्चा और ज्यादा उसी मार्ग में अर्थात् लड़कियों/लड़कों से मिलना आदि कार्य करने में ही लग जाते हैं यह वासना का चौथा कदम है।

**5.** पाँचवें कदम में एक-दूसरे को स्पर्श करना, आँखें मिलाना, गुप्त अंगोपांग को देखना आदि क्रियाएँ होती हैं।

**6.** छटवें कदम में एक-दूसरे के बिना रहना कठिन हो जाता है, पढ़ाई-लिखाई पूरी गोल हो जाती है।

**7.** सातवें कदम में पत्र, फोन, मोबाइल, ई-मेल आदि विशेष सम्पर्क प्रारम्भ हो जाता है। पत्रों में कुछ अश्लीलताएँ झलकने लगती हैं। फिर भी दोनों को यह समझ में नहीं आता है कि हम कुछ गलत भी कर रहे हैं लेकिन जब कभी अचानक यह बात समझ में आती है कि हमारे अन्दर वासना उत्पन्न हो चुकी है तब तक दोनों में इतना आकर्षण बढ़ चुका होता है कि चाहते हुए भी वे एक-दूसरे को छोड़ नहीं सकते हैं और आखिर वह दिन आ ही जाता है जब दोनों ही माता-पिता की आँख चुराकर भाग जाते हैं। कोई भाग कर पुनः लौट आते हैं और दूसरे से शादी कर लेते हैं। कोई शादी करके जीवन भर के



लिए पश्चाताप के आँसू बहाते हैं, कोई कुछ ही दिनों में तलाक दे देते हैं।

कुछ दिन पहले एक दिगम्बर जैन की लड़की एक सिक्ख लड़के के चक्कर में पड़कर भाग गई और शादी कर ली। शादी के बाद एक लड़का भी हो गया। लेकिन दोनों (पति-पत्नि) की बन नहीं पाई। आखिर लड़की के पिता को दो-चार लाख रुपये देकर तलाक करवाकर अपने घर में रखना पड़ा। एक लड़की ने बताया-माताजी! एक लड़का लगभग चार-पाँच साल से मेरे पीछे पड़ा था जब मैं किसी रास्ते से निकलती तो मुझे टकटकी लगाकर देखता था। मेरी कुछ मदद भी करता था इतना सब होने पर भी मैं यह नहीं समझ पाई कि यह लड़का मुझे गलत दृष्टि से देखता है। मैं भी उससे बोलती रही उसकी सहायता को स्वीकार करती रही। एक दिन मैं ऑफिस में टेबिल पर हाथ रखे बैठी थी तभी वह आया और उसने मेरे हाथ पर जब हाथ रखा तब समझ में आया कि यह तो मुझे वासना की दृष्टि से चाहता है। वह मेरे साथ शादी करना चाहता था तो मैं भी धीरे-धीरे उसके साथ विवाह करने का भाव मन में बनाने लगी। लेकिन जब मेरे मम्मी-पापा को यह बात मालूम हुई कि मैं उससे शादी करना चाहती हूँ तो मेरी मम्मी ने कहा-यदि तुम उस लड़के से शादी करोगी तो हम तुम्हारे से कोई रिश्ता नहीं रखेंगे। यह सुनकर मैंने सोचा-अरे, मैं मम्मी पापा को नहीं छोड़ सकती, मैं यदि इस लड़के से शादी करूँगी तो मेरे मम्मी-पापा छूट जायेंगे। अब मैं क्या करूँ....इस प्रकार सोचते-सोचते मैं डिप्रेशन में आ गई...। इससे यह सिद्ध होता है कि बिना वासना के/ गलत दृष्टि के भी लड़कों का सम्पर्क LOVE को प्रारम्भ कर सकता है/ कर देता है।

- **LOVE से हानियाँ :**

LOVE से अनेक प्रकार की हानियाँ होती हैं, उनमें से कुछ हानियाँ नीचे दी जाती हैं -

| | |
|---|---|
| 1. ज्योतिष की दृष्टि से हानि | 2. आर्थिक हानि |
| 3. सामाजिक हानि | 4. परभविक हानि |
| 5. शारीरिक हानि | 6. नैतिक हानि। |

**1. ज्योतिष की दृष्टि से हानि :**

LOVE करने वाले की जब शादी हो जाती है तब अधिकतर लोगों में प्रेम परिणाम आपसी मेल-मिलाप नहीं हो पाता है उसका एक कारण कुण्डली का नहीं मिलाना भी है। सामान्य से लोक में जब लड़के-लड़की की शादी होती है, उसके पहले उन दोनों की कुण्डलियों में ग्रह-नक्षत्रों की शत्रु-मित्रता का तथा आपसी गुणों का मिलान किया जाता है। LOVE करने वालों का आपसी गुणों का मिलान नहीं हो पाने से आपके भविष्य में क्या-क्या घटित हो सकता है ? उसे नहीं कहा जा सकता है। ज्योतिष शास्त्रों में 27 नक्षत्र तथा 12 राशियाँ बताई गई हैं। नक्षत्र और राशियों के अनुसार अष्टकूट निश्चित किये गये हैं, इन अष्टकूटों के न मिलने पर जीवन में निम्नलिखित प्रभाव पड़ सकते हैं/पड़ते हैं।

**अष्टकूट**-1. वर्ण 2. वश्य 3. तारा 4. योनि 5. गृहमैत्री 6. गण 7. भकूट 8. नाड़ी।

1. **वर्ण** का अर्थ मानव स्वभाव है। मानव स्वभाव चार प्रकार का है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। यदि वर के राशि वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम हो तो विवाह नहीं करना चाहिए। यदि कन्या ब्राह्मण वर्ण है और वर शूद्र वर्ण हो तो इन्द्र की भी कन्या विधवा हो सकती है। हीन वर्ण वाला वर और श्रेष्ठ वर्ण वाली कन्या हो तो वर की मृत्यु निश्चित होती है।

2. **वश्य** का अर्थ होता है वश में रखना। मानव सिंह को छोड़कर शेष सभी जीवों को नियंत्रित करने में समर्थ है, इसी प्रकार सिंह, बिच्छू को छोड़कर शेष सभी जीवों पर नियंत्रण रखता है। कुण्डली मिलान करते समय सिंह और बिच्छू का एक-दूसरे पर नियंत्रण न रहने से दोनों एक-दूसरे को नष्ट करने का प्रयास करेंगे। मानव और सिंह होने पर भी एक-दूसरे को नष्ट करने का प्रयास करेंगे इसलिए इस प्रकार कुण्डली नहीं मिलाना चाहिए।

3. **तारा**-कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनें। उसमें नौ का भाग देने से यदि 3, 5, 7 शेष बचे तो तारा अशुभ है। तारा के न मिलने से सुख समृद्धि का नाश होता है।

4. **योनि**-नक्षत्र एवं राशि के आधार पर योनियाँ निर्धारित हैं। यथा-



अश्व, गज, मेष आदि योनियाँ हैं। इनमें कुछ योनियों में प्राकृतिक वैर होता है, जैसे- गौ का व्याघ्र से, गज का सिंह से आदि। अतः वर कन्या के जन्म नक्षत्र के अनुसार यदि योनि बैर पड़ने पर विवाह करे तो वर-कन्या में सदैव वैर भाव रहेगा।

5. **गृहमैत्री**-गृहमैत्री का मिलाना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वर कन्या की राशि के स्वामियों में पूर्ण मैत्री होना आवश्यक है अन्यथा सुख के सभी साधन होते हुए भी जीवन कष्टमय ही रहता है। गृहमैत्री न मिलने पर दाम्पत्य जीवन में प्रेम, विश्वास और समर्पण की भावना का अभाव रहेगा।

6. **गण**- यदि वर और कन्या का एक गण हो तो दोनों में बड़ा प्रेम रहता है। यदि दोनों में से एक देव और दूसरा मानव हो तो मध्यम प्रेम, एक देव और दूसरा राक्षस हो तो वैर भाव तथा एक मनुष्य और दूसरा राक्षस हो तो वर-कन्या में से एक की मृत्यु हो जाती है।

7. **भकूट**- वर-कन्या की परस्पर राशि 6/8 हो तो मृत्यु, 9/5 हो तो संतान हानि, 2/12 हो तो निर्धनता होती है इसलिए कुण्डली मिलाते समय इनका विचार अनिवार्यतः किया जाता है।

8. **नाड़ी**- वर-कन्या दोनों के नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो अवश्य मृत्यु होती है। आदि नाड़ी में पड़े तो वर की मृत्यु, मध्य नाड़ी में पड़े तो कन्या की मृत्यु तथा अन्त्य नाड़ी में पड़े तो दोनों की मृत्यु होती है।

**ज्योतिष विद् पं. जगदीशप्रसाद तिवारी एम.ए. ( हिन्दी,संस्कृत )**

LOVE तथा Love Marrige करने वाले उपर्युक्त बातों पर थोड़ा विचार करें। LOVE करके थोड़े दिन सुख प्राप्त करके पूरे जीवन को अन्धकार में ढकेल देना कोई समझदारी की बात नहीं है।

आप यह भी नहीं सोचें कि कुण्डली मिलाना, मुहूर्त्त निकलवाना, शकुन देखना आदि सब मिथ्या कल्पनाएँ हैं। हम इन सब पर विश्वास नहीं करते हैं। एक ही पल में सैकड़ों बच्चों का जन्म होता है तो क्या वे सभी बच्चे एक जैसे नेचर/व्यक्तित्व वाले होते हैं। एक जैसे पुरुषार्थी या पुरुषार्थ हीन होंगे, एक जैसी उम्र लेकर आये हैं आदि-आदि बातों को लेकर यदि अनुमान लगाते हैं तो ऐसा दिखाई नहीं देता इसलिए कुण्डली मिलान पर हमें कोई

विश्वास नहीं है। आपका अविश्वास ऊपरी सतह पर खड़े होकर देखा जाय तो सत्य है लेकिन थोड़ा-सा गहराई से सोचा जाय तो वह कोरा-निरर्थक थोथा है। कुण्डली मिलान, शकुन आदि यदि सर्वथा झूठे हैं तो रामचन्द्र जी आदि बड़े-बड़े पुरुषों की शादी का मुहूर्त्त क्यों निकाला गया, क्यों बड़े-बड़े आचार्य महाराजों ने ज्योतिष ग्रन्थों की रचना की, क्यों निमित्तज्ञान पर प्रकाश डाला गया, क्यों व्यक्ति प्रश्न सुनकर, प्रश्न पूछने की विधि आदि देखकर ही उसके कार्य की सफलता-असफलता घोषित करने में सफल हुए हैं। एक बार एक व्यक्ति को एक स्थान से टीका करने के लिए एक ग्रन्थ मंगवाना था। उसने एक पत्र लिखकर एक आदमी के साथ भेजा। उसमें एक पंक्ति थी- ''नमूँ ताहि जाते भये, अरहन्तादि महान्'', इस पंक्ति को पढ़कर ग्रन्थ देने वाले पण्डित जी समझ गये कि अब उनकी मृत्यु बहुत जल्दी होने वाली है उन्होंने ग्रन्थ नहीं दिया। वास्तव में कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई।

आज भी कई महीनों/वर्षों पहले ग्रहण, अकाल, अतिवृष्टि आदि की घोषणाएँ सुनी जाती हैं तथा कई हद तक सही भी निकलती हैं। इसलिए ज्योतिष शास्त्र को सर्वथा अविश्वनीय एवं झूठा नहीं कहा जा सकता है। आज के युग में एक्सिडेंट, सुसाइड, एक-दूसरे का मर्डर आदि घटनाएँ विशेष रूप से देखी जा रही हैं तथा घर-घर में शादी के कुछ ही महीनों/दिनों में तलाक देने के विचार उत्पन्न होने लगते हैं, उसका एक कारण कुण्डली का मिलान नहीं करना भी माना जा सकता है। आज के बहु प्रतिशत लोग सबसे अच्छा मुहूर्त्त चाहे वह शादी का हो या गृह प्रवेश का, दुकान प्रारम्भ करने का हो या विवाह पक्का करने का रविवार को मानते हैं। वे अपने विचारों में जितना महत्त्व रिश्तेदार, मित्र मण्डली आदि की उपस्थिति का रखते हैं उतना महत्त्व मुहूर्त्त का नहीं रखते हैं। इसलिए वे सोचते हैं कि रविवार को कार्यक्रम रखने से हमारे सभी लोग इकट्ठे हो जायेंगे। इसी का दुष्फल है पति-पत्नी का रिश्ता बहुत अधिक दिनों तक नहीं टिकता है, व्यापार-व्यवसाय अधिक नहीं चल पाते हैं। कभी-कभी मुहूर्त्त आदि नहीं देखने पर भी कार्य में सफलता देखी जाती है। उसका कारण पूर्वोपार्जित प्रबल पुण्य का उदय मानना चाहिए और फिर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के निमित्त से कर्मों की उदय-उदीरणा भी



होती है। इसलिए अशुभ मुहूर्त्त में किया गया काम भी संभव है सफल हो जावे लेकिन वह तो ऐसा है कि अंधे का सिर खम्भे से टकरा गया फलतः सिर फूटने से आँखों में ज्योति आ गई, अर्थात् यह राज-मार्ग नहीं है हर अंधे को इस प्रकार का फल नहीं मिलता है, ये एक अपवाद मार्ग है। कहने का आशय यह है कि LOVE करने वालों की कुण्डली का मिलान करने का कोई अवसर नहीं रहता है। क्योंकि LOVE होने के बाद कुण्डली नहीं मिले तो भी LOVE छोड़ा नहीं जा सकता।

आपने प्रेम विवाह (Love Marrige) किया और आप दोनों में से किसी एक का मंगल है तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ अनिष्ट अवश्य होगा। लोक में मंगल वाले लड़के/लड़कियों की शादी बहुत कठिनाई से होती है क्योंकि मंगल वाले लड़के/लड़कियाँ कम होते हैं और बिना मंगल वालों से शादी करने में यह पूरा विश्वास रहता है कि पति-पत्नि में से कोई कुछ ही दिनों/महीनों में मरण को प्राप्त होगा अथवा उन दोनों के परिवार में से कोई खतम अवश्य होगा।

**3. आर्थिक हानि :**

LOVE होने पर जब लड़का अपनी प्रेमिका से मिलने जाता है तो उसका उसके लिए गिफ्ट लेकर जाना पड़ता है। हजारों रुपये की गिफ्ट ले लेने के बाद जब लड़की मना कर देती है, कह देती है कि मैं तो इस लड़के को पहचानती ही नहीं हूँ, मेरा तो इससे कोई परिचय ही नहीं है आदि....तब लड़के को समझ में आता है कि लड़की ने मेरे साथ नहीं, मेरे पैसे के साथ LOVE किया था इसलिए पैसा लूटकर अब नकार दिया। एक लड़के को एक वेश्या की लड़की से LOVE हो गया/ LOVE कर लिया। वेश्या उसके घर से बारह वर्ष तक धन मंगवाती रही। उसने उसके घर से साठ करोड़ दीनारों की सम्पत्ति मंगवा ली और जब एक दिन उस लड़के की पत्नि ने मजबूर होकर अपना मंगलसूत्र वेश्या की दासी को दिया तो वेश्या समझ गई कि अब इसके घर पर धन नहीं बचा है, पूरा धन समाप्त हो चुका है तब उसने उसको भोजन के साथ मादक पदार्थ मिलाकर खिला दिया और बेहोशी में उसको कपड़े में बाँधकर पुरिषालय (कच्ची लेट्रिन) के उस पात्र में जिसमें मल-मूत्र इकट्ठा होता था

पटक दिया। वह घंटों विष्टा में पड़ा रहा। जब महतरानी लेट्रिन साफ करने आई उसने गठरी खोलकर देखा तो एक श्रेष्ठी पुत्र बेहोश-सा उसमें बंधा था, धीरे-धीरे जब श्रेष्ठी पुत्र को होश आया तो वह समझा कि हाय मैंने कितनी मूर्खता का काम कर लिया, अब मेरा धन भी गया और मुझे प्रेमिका भी नहीं मिली।

कभी-कभी लड़की लड़के की माँ-भाभी आदि के आभूषण तक मंगवा लेती है प्रेम में पागल लड़का चोरी करके भी वे सब चीजें लाकर देता रहता है आखिर अनेकों पाप करके वह धन से रिक्त हो जाता है तब लड़की अपने वादे से मुकर जाती है। लड़के की कल्पनाएँ-कल्पनाएँ मात्र रह जाती हैं।

इसी प्रकार लड़कियाँ भी जब अपने प्रेमी लड़के से मिलने जाती हैं तो मूल्यवान गिफ्ट ले जाती हैं। अपने प्रेमी की इच्छा पूर्ति के लिए वह बहाने बनाकर मम्मी-पापा से पैसे ले लेती हैं और अपने प्रेमी को होटल, सिनेमा आदि के लिए देती रहती हैं। इसीलिए कई जगह सुना जाता है कि लड़की पापा की अलमारी से 10,000 रुपये लेकर भाग गई....। ऐसे ही कई लड़के, लड़की से पैसे ले लेकर अपना बेलेन्स बना लेते हैं, व्यापार शुरु कर लेने के बाद शादी के लिए नकार देते हैं, दूसरी लड़कियों से LOVE करने लगते हैं अथवा दूसरी लड़की से शादी कर लेते हैं तब लड़की, न कुछ कह सकती है और न कुछ कर सकती है।

एक लड़की जिसका किसी विजातीय लड़के से LOVE था उसके पिताजी ने दूसरे लड़के से उसकी शादी कर दी। पुण्य योग से उसके एक लड़का और एक लड़की भी हो गई अर्थात् उसकी शादी हुए 4-5 वर्ष हो चुके थे। एक दिन उसने अपने घर वालों से कहा मेरी वहाँ (अपने पीहर वाले गाँव का नाम बताया) सर्विस लग गयी है और इनको (अपने पति की) भी वहीं दुकान खुलवाने का निश्चय पापा ने कर लिया है। घर वालों ने घर बसाने के योग्य सभी सामग्रियों को इकट्ठी करके एक गाड़ी में भरवा दी। जैसे ही गाड़ी तैयार हुई वह सबकी आँखों में धूल डालकर अपनी एक-डेढ़ माह की लड़की और लड़के को छोड़कर गाड़ी लेकर भाग गयी और जाकर पुलिस



स्टेशन पर रिपोर्ट कर दी। 2-3 दिन बाद बेचारे आदमी को पुलिस पकड़कर ले गई। पुरुष ने जैसे-तैसे जमानत देकर के छुटकारा पाया और बच्चों का पालन किया। लेकिन इस मूर्खा का क्या हुआ उसे सुनो। जब वह अपने घर का पूरा सामान जो लगभग चालीस-पचास हजार का था लेकर अपने LOVE वाले पुरुष के पास पहुँची तो उसको देखते ही उसकी पत्नी (उसके प्रेमी ने जिस लड़की से शादी की थी) पागल कुत्ते की तरह उसके ऊपर टूट पड़ी। उसने जल्दी से जाकर रिपोर्ट कर दी और पूरी गाड़ी अपने घर में खाली करवा ली। पुलिस आई और उन दोनों को (प्रेमी-प्रेमिका) गिरफ्तार कर लिया। जैसे-तैसे करके वे जेल से छूटे तो भी उसकी पत्नी ने उसे अपने घर नहीं रहने दिया। फलतः लड़के ने उसे अपने घर से निकाल दिया, मूर्खा LOVE करने वाली लड़की को रोटी (भोजन) के भी लाले पड़ गये।

**3. सामाजिक हानि :**

प्रेम विवाह (Love Marrige) करने वाला यदि अन्तर्जातीय हैं तो समाज उनको किसी भी प्रकार से स्वीकार नहीं करती है। अपनी जाति को छोड़कर अन्य जाति के लड़के से शादी करने वाले दम्पति किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में भाग नहीं ले सकते हैं मजबूरी से यदि कर भी ले तो अन्तरंग में श्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती और श्रद्धा के बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती है। फिर जीवन में धर्म के बिना सहारा ही किसका है जिसका आश्रय लेकर व्यक्ति सुख-शान्ति से जी सके। प्रेम विवाह (Love Marrige) करने वाले को धर्म का सहारा तो छूट ही जाता है तो वे सुखी कैसे रह सकते हैं ? कई घरों में विशेष रूप से चौके की शुद्धि पाली जाती है। उनके घर में यदि नीच कुल की लड़की आई है तो माता-पिता (सास-ससुर) जब उसको रसोई घर में नहीं घुसने देते हैं, अपने घर की शुद्ध वस्तुओं का स्पर्श नहीं करने देते हैं तो लड़की को बहुत फीलिंग होती है, अपने आपमें हीनता की अनुभूति होने लगती है। धीरे-धीरे इन्हीं छोटी-छोटी बातों को लेकर घर में कलह होने लगती है, वह घर में शूद्र महिला के रूप में देखी जाती है। हो सकता है तत्काल यौवन का नशा होने से इन सब बातों का उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़े लेकिन उम्र ढलने के बाद अथवा जब बच्चों की शादी का अवसर आता है

तब अवश्य ही पश्चाताप करना पड़ता है क्योंकि न लड़की की समाज वाले उनके बच्चों का सम्बन्ध जोड़ते हैं और न लड़के की समाज वाले। फिर जैसे-तैसे लड़के-लड़कियों के साथ विवाह करना पड़ता है। अथवा धार्मिक अनुष्ठानों के समय सक्षमता होने पर भी विशेष धर्म नहीं कर पाने पर मात्र अन्दर-अन्दर घुट-घुटकर जीना शेष रह जाता है।

विजातीय विवाह होने पर जब माता-पिता के सामने यह बात आती है कि या तो वे समाज के साथ रहें या अपने बेटे को पास रखें अर्थात् यदि वे इस प्रकार के विवाह करने वाले बेटे को अपने घर में रखते हैं तो उनको समाज में नहीं रहने दिया जायेगा। समाज से बहिष्कृत कर दिया जायेगा। यदि उन्हें समाज में रहना है तो अपने बेटे को अलग करना ही होगा। ऐसी स्थिति में जब माता-पिता अपने बेटे को अलग कर देते हैं तो वह सभी रिश्तेदारों से टूट जाता है, उसको मजबूर होकर अपने आप में अकेला ही रहना पड़ता है।

इसी प्रकार यदि उच्च कुलीन लड़की नीच कुल वाले लड़के के साथ LOVE होने के कारण विवाह कर लेती है तो नीच कुल वाले अपने अनुसार ही भोजन रहन-सहन, धर्म आदि करवाते हैं और लड़की ने जब ऐसा-वैसा अर्थात् हमेशा रात्रि में खाना, माँस-मदिरा आदि खाना उनके भगवान् का भजन-कीर्तन आदि किया ही नहीं था, वह सब करने में उसका मन नहीं लगता है। जब वह बिना मन के करती है तो उल्टा-सीधा कुछ भी हो जाता है या बिगड़ जाता है ससुराल वालों की डाँट ही खानी पड़ती है, दिन में कई बार सास-ननद के व्यंग सुनने पड़ते हैं। नीच कुल में शादी कर लेने के कारण जब पीहर वाले नहीं बुलाते हैं और आमना-सामना हो जाने पर भी भाई, मम्मी-पापा आदि नहीं बोलते, रास्ता बदलकर या बिना कुछ प्रतिकार किये अर्थात् जैसे वह उनके कुछ लगती ही नहीं थी / नहीं है, चले जाते हैं तो लड़की को कैसा लगता होगा, यदि आपके साथ ऐसा होगा तो आपको कैसा लगेगा। आप थोड़ी कल्पना करके देखें। नीच कुल वाले उसको देखकर शायद ही यह सोचते होंगे कि इसने अच्छा काम किया है, हाँ उसे देख-देखकर यह अवश्य ही सोचते होंगे कि अरे इस मूर्खा ने यह क्या कर दिया, क्यों अपने जीवन को इस प्रकार से बर्बाद किया आदि.......।



**4. परभविक हानि :**

LOVE करने वाला इस भव में मार-पीट, तिरस्कार, जेल में बन्द होना, मृत्यु दण्ड आदि अनेक कष्ट पाता है और जिनका LOVE हो गया है उसका वह प्रेम भवों-भवों तक साथ जाता है। LOVE होने के बाद दोनों में से यदि किसी एक ने धोखा दिया तो वह उससे वैर भाव कर लेता है फलतः वे दोनों भव-भव तक साँप-नेवला, कुत्ता-बिल्ली आदि परस्पर विरोधी जातियों में उत्पन्न होकर एक-दूसरे को दुःख देते हैं।

LOVE करने वालों की आसक्ति के कारण से उनको ऐसे पापों का बन्ध होता है जिनके फल में उनके अंगोपांग विकल होते हैं अर्थात् वह या तो नपुंसक होता है या उसे संतान उत्पत्ति/ गर्भ धारण की क्षमता नहीं मिलती है या उसके गुप्त अंगों में ऐसी बीमारी होती है जिसकी वेदना वह जिस किसी के सामने कह भी नहीं सकता है और किसी डॉक्टर आदि के माध्यम से यदि लोगों को रोग की जानकारी हो जाने पर सब उसकी हँसी उड़ाते हैं, उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और समय-समय पर व्यंग करते हैं जिससे कभी-कभी आत्महत्या (Suicide) करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

LOVE करने वालों का प्रेम जब अगले भवों में भी बना रहता है योग से यदि दोनों मिल भी जाते हैं अर्थात् दोनों की शादी भी हो जाती है और जब किसी कारण विशेष से यदि अल्प उम्र में एक-दूसरे का वियोग हो जाता है तो पीछे बचने वाला अर्थात् जिससे वियोग हुआ है वह जीवन भर उसके वियोग में झूरता रहता है अथवा कोई बलवान व्यक्ति उन दोनों में से किसी एक को छीन लेता है तो भारी कष्ट होता है जिसका वह न प्रतिकार कर सकता है और उसके बिना रह पाता है।

LOVE करने वालों को निश्चित रूप से दुर्गति मिलती है जहाँ गाय, भैंस, बैल, हाथी, घोड़ा आदि बन गये तो एक-दूसरे का मिलना दुष्कर होता है क्योंकि ये पालतू पशु हैं इसलिए इन्हें हमेशा बन्धन में रहना पड़ता है फिर यदि योग से एक-दूसरे का मिलना हो भी जावे तो मालिक के द्वारा बेच देने पर वियोग सहना पड़ता है यदि जंगली पशु बनते हैं तो भी मिलना और दोनों के प्रेम के बीच में शिकारी, बहेलिया, जंगली जानवरों के द्वारा कोई बाधा नहीं

पहुँचाई जाय यह विचारणीय विषय है।

यदि नरकगति में जाते हैं तो वहाँ पूर्व भव में एक-दूसरे के प्रति हित के लिए किये गये कार्य भी अहितकर नजर आते हैं ऐसा नारकियों का स्वभाव ही है कि ये उपकार को भी अपकार रूप में स्मरण करके एक-दूसरे को भारी दु:ख देते हैं। यदि योग वश पहले मरने वाला यदि भूत बनकर बदला लेने के लिए आ पहुँचा और आपने जिससे शादी की है उसको दु:खी करने लगा तो क्या होगा। कहने का आशय यह है कि LOVE करने वाले मरकर कहीं पर भी जावें उनको सुख नहीं मिलता है उनको LOVE के कारण बंधे हुए पाप के उदय में दु:ख भोगने ही पड़ते हैं।

❑ **यदि गर्भवती हो गई तो :**

कोई-कोई मूर्ख लड़के-लड़की जब प्रेम में पागल हो जाते हैं उन पर वासना का इतना भूत सवार हो जाता है कि वे अपनी मर्यादा को ही लाँघ जाते हैं फलतः लड़की गर्भवती हो जाती है तब वह न किसी से कुछ कह ही सकती है और न ही कुछ किये बिना रह ही सकती है क्योंकि गर्भ की स्थितियाँ कभी छुप नहीं सकती। जब वह गर्भ के चिह्नों से पकड़ी जाती है और पूछा जाता है कि तेरे साथ किसने यह गलत काम किया है यदि नाम बता देती है तो लड़का मना कर देता है कि मैं तो इसको जानता ही नहीं हूँ, इससे मेरी कोई बोल-चाल, जान-पहचान ही नहीं है तब लड़की क्या कर सकती है ? उसको अपने किये पर पश्चाताप होता है और उसे एक बालक को जन्म देकर तत्काल अलग करना पड़ता है तब उसकी वेदना वही जानती है। अपने कलेजे का टुकड़ा जिसको कोई जोर से बोल भी दे तो माँ को अच्छा नहीं लगता, उस माँ को नहीं चाहते हुए भी बच्चे को फेंकना पड़ता है तथा वह बच्चा अपने पुण्य से यदि किसी के यहाँ पलता है तो वह उसे देख-देखकर माँ कुन्ती के समान मात्र घुटती रहती है, चाहते हुए भी कुछ नहीं कर सकती है/कर पाती है।

यदि वह गर्भ में आते ही गर्भपात कराने का विचार करती है तो कितने लोगों की आँख में उसे धूल डालकर हॉस्पिटल जाना पड़ता है। कभी-कभी गर्भपात की अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग करने पर भी जब गर्भपात नहीं हो पाता है तो ऑपरेशन कराना पड़ता है। उस ऑपरेशन की बात को वह



किसी से कह नहीं सकती और गर्भपात से हुई शरीर की क्षति (कमजोरी) की पूर्ति के लिए कुछ अच्छी खुराक भी नहीं ले सकती क्योंकि पौष्टिक भोजन करने के लिए कुछ कारण बताना आवश्यक होता है। खुराक नहीं खाने पर शरीर नाजुक एवं शक्तिहीन हो जाता है। यह गर्भपात की क्रिया छुपकर ही करनी/ करानी पड़ती है, जिसमें भय के कारण भी शरीर में अनेक प्रकार की बीमारियाँ खड़ी हो जाती हैं। जब तक गर्भपात नहीं हो जाता तब तक भारी टेंशन भी होता रहता है, इसमें भी शरीर में विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। इसके साथ-साथ निकृष्ट पाप कर्मों का बन्ध भी होता रहता है। एबोर्सन होने के बाद कई लड़कियाँ जब शादी करने के बाद भी माँ नहीं बन पाती हैं, बार-बार एबोर्सन होने लगते हैं, सास-ननद के ताने सुनने पड़ते हैं, तब समझ में आता है कि मैंने LOVE करके कितना गलत काम किया था।

गर्भपात करवाने में जो जीव मरा था अर्थात् जिस बच्चे का एवोर्सन करवाया था वह भूत आदि दुर्गति में जाकर गर्भपात कराने वाले को दु:खी कर सकता है।

यदि लड़की गर्भवती होने के बाद आत्महत्या करती है तो उसके कारण घर वाले फँस जाते हैं, पोस्टमार्डम होने पर पूरी पोल खुल जाने पर घर वालों की बदनामी हो जाती है। फिर आत्महत्या करने वालों की कभी सद्‌गति नहीं होती वह मरकर भूत आदि बन गये तो स्वयं दु:खी होते हैं और दूसरों को भी दु:खी करके पाप का अर्जन करते हैं।

जब कोई लड़के-लड़की का LOVE हो जाता है तब वे पैसे लेकर भाग जाते हैं, आखिर छुपकर कितना पैसा ले जाया जा सकता है। इसलिए वह पैसा निश्चित रूप से कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाता है फिर बिना विवेक के बेहोशी में पैसा खर्च करने पर तो वह चल ही कैसे सकता है ? पैसा समाप्त होने पर जब पैसे की आवश्यकता पड़ती है और लड़के को पैसा कमाना तो आता ही नहीं है क्योंकि पैसा कमाने की विधि जब सीखने के दिन थे या अच्छी पढ़ाई करके आजीविका का साधन कोई सर्विस आदि प्राप्त करनी थी तब तो LOVE करने में लग गये, पूरे दिन मोबाइल पर अपनी प्रेमिका की फोटो देखते रहे, बातें करते रहे और समय मिला तो उसी के साथ घूमते रहे, पढ़ाई

कैसे हो पाती ? उन्हें खाली हाथ अपने घर लौटना ही पड़ता है, बेचारा शादी कर भी लेता तो बीबी को क्या खिलाता, कहाँ रखता, कैसे घर की व्यवस्थाएँ करता इसलिए वह उससे शादी भी नहीं कर पाता है फलतः लड़की कुँवारी ही विधवा जैसी अनुभूति करने लगती है। यदि वह दूसरे किसी लड़के के साथ शादी करती है तो एक थोपा हुआ शारीरिक प्रेम का लगाव तो चलता ही है लेकिन मानसिक प्रेम के बारे में तो वह स्वयं पश्चाताप की अनुभूति ही करती रहती है।

**5. शारीरिक हानि :**

LOVE करने वाले लड़के के मन में वासना की व्याग्रता होने के कारण उसकी हस्तमैथुन की आदत पड़ जाती है। वह अपने हाथ से ही अपने अंगों को बार-बार स्पर्श करता रहता है फलतः जब कभी वीर्यपात होने लगता है। एक बार वीर्यपात का अर्थ चालीस दिन का खाया-पिया निकल जाना। वीर्यपात से शरीर की ऊर्जा कम हो जाती है। शरीर में ऊर्जा कम होने से दिमाग कमजोर हो जाता है, स्मृति नष्ट होने लगती है। कहने का तात्पर्य यह है कि LOVE करने वाले लड़के का शरीर जो यौवन में प्रवेश के साथ-साथ हष्ट-पुष्ट बलशाली होना चाहिए वह यौवन आने के पहले ही शिथिल होने लगता है। इस खोटी आदत के कारण किसी-किसी के स्वप्न में ही वीर्यपात हो जाता है। नहीं चाहते हुए भी, अपने आपको इससे बचाने की कोशिश करते हुए भी अपने को नहीं बचा पाता है। इस प्रकार बार-बार वीर्यपात होने के कारण किसी-किसी संतान उत्पत्ति की क्षमता भी समाप्त हो जाती है।

इसी प्रकार लड़कियों में भी ऐसी आदत पड़ जाती है Hair pins, testtube जैसी वस्तुएँ कितनी ही बार vagina (योनी) में पाई गई है। इस प्रकार लड़की को भी उतनी ही हानि होती है जितनी एक लड़के को होती है वह भी यौवन अवस्था में ही वृद्ध दिखने लगती है। उसके भी शरीर की कान्ति नष्ट हो जाती है वह भी ओजहीन दिखने लगती है....।

डॉक्टरों का कहना है कि LOVE करने से धीरे-धीरे यौन सम्बन्ध भी स्थापित होने लगता है। अल्प उम्र में यौन सम्बन्ध स्थापित हो जाने से स्त्री / लड़की के स्तन ढीले हो जाते हैं, उसकी सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इस कारण बालविवाह को भी अनुचित माना जा सकता है।



**6. नैतिक हानि :**

नैतिक हानि का अर्थ दुश्चारित्रता, खोटा चारित्र अर्थात् आचरण का गिर जाना बिगड़ जाना है। आचरण दो प्रकार के होते हैं-

1. सदाचरण 2. दुराचरण

**1. सदाचरण-** अच्छे आचरण को सदाचरण कहते हैं।

**2. दुराचरण-** खोटे आचरण को दुराचरण कहते हैं।

जिसका अपना स्वाभाविक चरित्र (Character) नष्ट हो जाता है अर्थात् सभ्यता, शील, भय, नियम, धर्म आदि नष्ट हो जाते हैं वही दुराचरण कहलाता है, उसे ही नैतिक पतन कहते हैं। यद्वा-तद्वा बिना जाने-पहचाने जिस किसी के साथ LOVE/प्रेम विवाह (Love Marrige) कर लेने से नैतिकता की रक्षा करना बहुत कठिन है। क्योंकि LOVE हो जाने के बाद ससुराल में जैसा वातावरण होता है जैसा धर्म-कर्म, व्यापार-व्यवसाय आदि होते हैं वैसा ही लड़की को करना ही पड़ता है भले ही वह स्वयं स्वीकार करती रहे कि यह धर्म सच्चा नहीं है, इन जहाँ कहीं के पत्थर में स्थापित देवी-देवता कुछ नहीं कर सकते हैं, इस प्रकार के व्यापार-व्यवसाय से भारी हिंसा होती है, भयंकर पाप का बन्ध होता है, ये वेश्यावृत्ति रूप सबसे बड़ा कलंक का काम है, इससे स्त्री का मौलिक गुण शील नष्ट हो जाता है, शील नष्ट हो जाने के बाद स्त्री के जीवन में बहुत कुछ होने पर भी कुछ नहीं होता है उसको नहीं चाहते हुए भी उसे सब कुछ करना ही पड़ता है। एक लड़की बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी, यद्यपि वह बहुत कुछ धर्म समझती थी, धर्म का पालन भी करती थी लेकिन LOVE का धर्म और धार्मिकता से सम्बन्ध ही क्या है वह तो अंधा, बहरा, गूंगा और पागल होता है। उस लड़की पर भी LOVE का भूत सवार हो गया। वह एक लड़के से LOVE करने लगी। LOVE करने के पहले तो वह सोच ही नहीं पाई कि मैं किससे LOVE कर रही हूँ, मैं किसके प्रति आकृष्ट हुई हूँ, LOVE के बाद उसको मालूम पड़ा कि वह लड़का जाति और कर्म दोनों से हीन है अर्थात् वह नीच कुल का है और नीच/ पापात्मक कार्य ही करता है। उसके घर में एक टाइम के खाने की व्यवस्था बनती है तो दूसरे टाइम की नहीं बन पाती थी अर्थात् न वह स्वयं कुछ कमाता था और न उसके घर में कुछ

जमीन–जायदाद ही थी। यह सब जानकर भी उसका लड़के से इतना लगाव हो गया कि वह किसी हालत में उसको छोड़ नहीं सकी। जब घर वालों को मालूम पड़ा तो घर वालों ने भी उसे साम, दाम, दण्ड से समझाया लेकिन चिकने घड़े के समान उस मूर्खा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अनेक कोशिशों के बाद भी वह एक दिन कॉलेज में परीक्षा देने के लिए जा रही हूँ यह बहाना बनाकर उस लड़के के साथ भाग गयी और कोर्ट में शादी कर ली। ससुराल में पहुँचने पर सास–ससुर ने भी उसका आव–आदर नहीं किया। लड़का भी अपने पिता के समान कुछ नहीं कमाता था इसलिए मजबूर होकर उसको भी अपनी सास के रोजगार में हाथ बँटाना पड़ा अर्थात् उसे भी वेश्यावृत्ति करके धन का अर्जन करना पड़ा। उसका शील नष्ट हो गया, उसका धर्म भ्रष्ट हो गया, उसका कुल कलंकित हो गया और जीवन भर के लिए पापात्मक कार्य करके भी मात्र पश्चाताप मिला, यह पश्चाताप और कुछ नहीं और कुछ मिलेगा वह सब अगले भव में अथवा इसी जीवन के अन्तिम पड़ाव में, बस यही है LOVE का फल।

❑ **मानसिक अशान्ति** :

LOVE करने वालों को तत्काल में कुछ दिनों /महीनों तक हो सकता है अच्छा लगे लेकिन जीवन भर तो उनको अच्छा लग ही नहीं सकता है क्योंकि प्रत्येक भारतीय नागरिक की बात तो दूर पशु–पक्षियों के भी ब्लड में धर्म के संस्कार अवश्य होते हैं। एक चोर भी चोरी करते समय इस बात को स्वीकार करता है कि मैं गलत कर रहा हूँ, एक माँसाहारी भी इस बात को मानता है कि यह पाप है, इसके फल में मुझे निश्चित रूप से दुःख भोगना पड़ेगा इसलिए उम्र ढलते–ढलते तो लगभग बहु प्रतिशत लोग पाप छोड़ ही देते हैं। LOVE करने वालों को तो जीवन के अन्तिम पड़ाव का इंतजार करने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि LOVE करने में सफलता बहुत कम लोगों को मिलती है, सैकड़ों लोगों में से कोई एक लड़का/लड़की होगा जिसके जीवन में प्रेम विवाह (Love Marrige) करने पर भी पश्चाताप नहीं होता होगा। LOVE करने वालों को तो शादी के एक–दो वर्षों में ही वेदना प्रारम्भ हो जाती है।



एक दिन एक महिला ने एक साध्वी से अपने पापों का पश्चाताप करते हुए कहा–माँ, मेरे सात बेटे हैं, घर में कुँआ, खेत, खलिहान, जमीन–जायदाद आदि सब कुछ हैं, मैं बाहर में बहुत सुखी हूँ, मेरे पति भी बहुत अच्छे हैं, मेरे घर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है, ऐसी कोई चिन्ता का कारण भी नहीं है फिर भी मैं सुखी नहीं हूँ, मेरे मन में शान्ति नहीं है, मुझे हमेशा एक बात का पश्चाताप होता रहा है...। साधु ने कहा–तुम्हारे पश्चाताप का क्या कारण है जिससे तुम सभी अनुकूलताएँ होने पर भी दुःखी हो। उसने रोते हुए बड़ी मुश्किल से कहा–माँ मेरी शादी किसी एक ऐसे व्यक्ति से हुई थी जो अपंग था, वह खेती आदि का काम अच्छी तरह नहीं कर पाता था। मुझे वह पसन्द नहीं आया मैंने इनसे (वर्तमान के पति से) LOVE प्रारम्भ कर दिया और कुछ ही दिनों के बाद दूसरी शादी कर ली। मेरे पीहर वाले भी इस बात से नाखुश नहीं थे लेकिन शादी के कुछ महीनों बाद ही मुझे महासती सीता का जीवन याद आया, मैंने सीता का जीवन सुना तो मुझे पश्चाताप होने लगा। मेरे मन में ऐसा लगने लगा कि मैंने कितनी बड़ी गलती कर दी। क्या प्रेम भी किसी एक को छोड़कर दूसरे से हो सकता है ? एक बार जिसको पति के रूप में स्वीकार कर लिया अर्थात् अपने हृदय में स्थान दे दिया क्या इसके बाद पुनः किसी दूसरे को स्थान दिया जा सकता है। सती सीता ने चौदह वर्ष तक वन में पति की सेवा करके बिताये तो क्या मैं अपने पति के साथ घर में समय नहीं बिता सकती थी। अरे, वे काम नहीं कर रहे थे तो क्या मेरा कर्त्तव्य नहीं था कि मैं श्रम करके उनको भी खिलाती और स्वयं भी खा लेती....। कहने का तात्पर्य यह है कि LOVE करने वालों को अपने पाप का पश्चाताप अवश्य होता है।

❑ **LOVE नहीं, देह बेच दी** :

कई लड़के दूसरे की पत्नी / लड़की की गरीबी देखकर पैसे से हेल्प करते–करते उसको LOVE के बहाने अपने चंगुल में इतना फँसा लेते हैं कि वह गरीब लड़की यह समझ ही नहीं पाती है कि आखिर क्या हो रहा है। उसने तो इतने अच्छे कपड़े–आभूषण, खाने–पीने की इतनी अच्छी चीजें कभी देखी नहीं है और उसे बिना किसी श्रम के प्रेम के साथ सहज रूप से सब कुछ मिल रहा है। इसीलिए तो वह उसके अन्दर तक नहीं पहुँच पाती है तथा

आखिर वो दिन आ जाता है जिस दिन वह केवल एक अपने प्रेमी की नहीं, क्लब की वेश्या बन जाती है। वह अकेली होती है उसके प्रेमी, प्रेमी नहीं उसके शरीर से प्यार करने वाले, उसकी इज्जत को मूल से ही नष्ट करने वाले अनेक होते हैं और उसका मूल्य उसे मात्र हाई क्वालिटी की भोग-सामग्री मिलती है प्रेम नहीं, मन के गम की बात को कोई सुनने वाला नहीं होता, वह तो एक देह के व्यापार की वस्तु ही रह जाती है। उसको लाखों की सम्पत्ति भी तो नहीं मिलती क्योंकि वह सम्पत्ति तो उसको मिलती है जिसके साथ वह बिकी थी, जिसके चंगुल में वह अनजान में भ्रमित होकर फँस गई थी। जवानी इसी प्रकार चलती है, जब तक देह की सुंदरता रहती है उसके रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्थाएँ होती रहती हैं लेकिन इन भोगों की अति से, अश्लीलता से जब उसका शरीर कान्ति हीन होकर रोगों का घर बन जाता है, उठने-बैठने की शक्ति समाप्त हो जाती है तब कोई उसके सामने देखने वाला तक नहीं मिलता है।

एक लड़की जो इसी प्रकार फँस गयी थी उसके रूप पर छोटे-मोटे सेठ साहूकारों की बात बहुत दूर राजा-महाराजा भी फिदा रहते थे। उसको भी अपने रूप पर बहुत गर्व था। जब वह वृद्ध हो गई। उसके पाप का घड़ा शरीर में कुष्ठ के रूप में फूटा। जैसे ही उसके शरीर में कुष्ठ हुआ राजा ने, नगर निवासियों ने, उन्हीं लोगों ने जिनके कारण उसका शरीर आज इतना जर-जर हो गया था, नगर के बाहर निकाल दिया। वह नगर के बाहर जहाँ मनुष्यों का शब्द सुनना भी कठिन था रहने लगी। उसके ऊपर भिनभिनाती सैंकड़ों-हजारों मक्खियों को कोई उड़ाने वाला नहीं बचा, वह रेंग-रेंग कर भी अपना काम नहीं कर सकती थी और करने वाला कोई नहीं था। आप सोचें एक बार के LOVE का यह दुष्परिणाम है यह फल इसी भव में मिला है अगले भव में उसको क्या और कितनी वेदना होगी उसको कौन कह सकता....। वह तिर्यञ्च मनुष्य बन गयी तो नपुंसक बनेगी, नपुंसक नहीं बनी तो उसके लिङ्ग को जबरन छिदवाया जायेगा। जबरन उसे नपुंसक बनाया जायेगा। वह किसी सद्गुरु के उपदेश से ब्रह्मचर्य या स्वदार संतोष पालन करने की भावना करेगी तो भी नहीं पाल पायेगी। कहने का मतलब वह धर्म से बहुत दूर हो जायेगी।



❑ **LOVE के बदले मार मिली :**

LOVE करने वाले को प्यार मिले या नहीं मिले क्योंकि प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम दिखावटी, स्वार्थपूर्ण भी हो सकता है तात्कालिक भी हो सकता, मनोरंजन के लिए भी हो सकता है लेकिन मार, तिरस्कार, धुत्कार तो अवश्य मिलते हैं। LOVE करने वाले को शादी के बाद संभव है भाग्य से थोड़े कुछ दिन सुख मिल जावे परन्तु शादी के पहले तो वह स्वतंत्रता से प्रेम कर ही नहीं सकती, जितना भी वे करेंगे उनको छुप करके ही करना पड़ेगा इसलिए उन्हें प्रेम कैसे मिल सकता है ?

कुछ दिन पहले एक लड़की ने अपनी कॉलेज लाइफ में एक लड़के से LOVE किया। लड़के के छोटे भाई को यह मालूम पड़ा कि फला लड़की ने मेरे भाई को अपने चंगुल में फँसा रखा है तो उसने फोन पर अपने बड़े भाई की आवाज में लड़की से कहा-आज तुम इतने बजे फलाने स्थान पर आ जाना। लड़की सूचना के अनुसार ठीक समय पर उस स्थान पर पहुँच गई। लड़के का भाई भी षड्यंत्र के अनुसार वहाँ पहुँच गया। उसने लड़की को देखते ही इतना मारा कि लोग कहने लगे अरे LOVE किया सो इतनी मार खानी पड़ी की शरीर पर कपड़े ही नहीं बच पाये। इसी प्रकार LOVE करने वाली लड़की को स्वयं के भाई, माता-पिता, काका आदि मारते ही हैं। कई-कई भाई तो ऐसी बहिन को आग लगाकर मार देने में भी नहीं हिचकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अज्ञानता से की गई एक गलती का फल जिन्दगी के कई पड़ावों में भोगना पड़ता है।

❑ **बचपन का फल बुढ़ापे में :**

इस LOVE का फल तत्काल अर्थात् कुछ वर्षों तक ही मिलता हो ऐसी कोई बात नहीं है LOVE के संस्कार तो माता-पिता से पुत्र-पौत्र तक भी पहुँचते हैं। यहाँ तक 4-5 पीढ़ी तक भी वे संस्कार जा सकते हैं क्योंकि LOVE के संस्कार जब ब्लड में मिल जाते हैं तो उसी ब्लड से उत्पन्न होने वाली संतान में वे संस्कार चले जाये तो आश्चर्य भी नहीं किया जा सकता है। जब माता-पिता के LOVE के संस्कार बच्चों में पड़ गये। बच्चे भी जब प्रेम विवाह (Love Marrige) करके अपनी प्रेमिका को साथ घर आते हैं। बहू

रानी वृद्ध माता-पिता की एक बात भी सुनने को तैयार नहीं होती है अपने पति को लेकर अलग रहने लगती है तब उन वृद्ध माता-पिता को समझ में आता है कि हमने जो LOVE किया था उसका वास्तविक फल तो हमें अब मिला है।

एक लड़की ने अपनी छोटी-सी 12-13 वर्ष की उम्र में ही LOVE करना प्रारम्भ कर दिया। वह कई लड़कों के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ने लगी। उसके पापा ने उससे परेशान होकर सोलह वर्ष की उम्र में ही उसकी शादी कर दी। शादी के एक वर्ष में ही उसके एक लड़का हो गया। लेकिन लड़का होते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। उसने पति के मरने के बाद ग्यारहवीं कक्षा से फिर पढ़ाई करके सर्विस की और श्रम पूर्वक अपने लाड़ले का पालन किया। इतने लाड़-प्यार से पालन करते हुए भी लगभग उन्नीस वर्ष की अल्प उम्र में ही लड़के ने प्रेम विवाह (Love Marrige) कर लिया। यह घटना सुनकर मुझे लगा कि माँ में जो LOVE के संस्कार थे, वे संस्कार उसके बेटे में भी आ गये। उसने भी बचपन में LOVE कर लिया। वह एक-डेढ़ वर्ष में ही माँ से अलग हो गया। आज वह अपनी बीबी के मोह में पागल हुआ माँ से बोलना भी पसंद नहीं करता। यह बचपन में LOVE करने का वृद्धावस्था में मिलने वाला दुष्फल है अर्थात् LOVE करने वाले के साथ जब यह बीतती है कि उसके बेटे ने भी किसी एक अयोग्य लड़की से LOVE कर लिया है और बहू, सास-ससुर से न बोलती है तथा न अपने पति को बोलने देती है। तब समझ में आता है कि LOVE करना कितना खतरनाक/दुःखदायी है।

❑ **LOVE से मौत मिली :**

वैसे बहु प्रतिशत लोगों को तो LOVE का फल मौत ही मिलता है क्योंकि कोई स्थिर चित्त वाला लड़का / लड़की तो LOVE करता ही नहीं है। जो चंचल चित्त होते हैं जिनको अपने आप में यह विश्वास नहीं होता है कि हमारे माता-पिता हमारी शादी किसी योग्य कुल-वंश वाले लड़के/लड़की से करवायेंगे, वे ही ऐसी अर्थात् LOVE करने की मूर्खता करते हैं। वे LOVE करने के बाद यदि लड़के को लड़की या लड़की को लड़का नहीं मिलता हैं, आत्महत्या करके मरते हैं अथवा शादी के बाद आपस में विचार नहीं मिलने के कारण मरते हैं या अपनी प्रेमिका/प्रेमी की इच्छाओं की पूर्ति करने के लिये



अपनी जान देते हैं। अर्थात् अधिकतर LOVER को तो बेमौत ही मरना पड़ता है। किसी लड़की का यदि दो-तीन लड़कों से LOVE होता है तो बलवान प्रेमी निर्बल प्रेमी को मार डालता है कोई विवाहित या अविवाहित लड़का भी यदि किन्हीं दो-तीन लड़कियों से प्रेम कर लेता है तो बलवान लड़की भी निर्बल लड़की को मरवा डालती है एक चोर का एक वेश्या से LOVE हो गया। एक दिन उस वेश्या ने कहा-हे प्रिय! यदि आप मुझसे वास्तव में प्रेम करते हैं तो राजा की पट्टरानी के गले का हार लाकर दो। यदि आप हार लाकर नहीं देंगे तो आपका-मेरा रिश्ता ही समाप्त हो जायेगा। चोर ने कहा-वाह री प्रिये! तुम भी क्या बात करती हो। मैं दो दिन में ही हार लाकर नहीं दे दूँ तो तुम मुझे अपना सच्चा प्रेमी मत समझना....। मैं आज ही तुम्हें वह हार लाकर दूँगा। तुम प्रसन्न रहो यही मेरा जीवन है मैं मात्र तेरे लिए ही तो जी रहा हूँ आदि कहकर वह उसी दिन रात्रि में रानी के गले का हार चुराकर भागता है लेकिन थोड़ी सी असावधानी के कारण सिपाहियों के द्वारा पकड़ा जाता है उसको सूली की सजा मिलती है वह सदा-सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाता है, उसको प्रेमिका का सुख तो नहीं मिल पाया है बल्कि प्रेमिका के लिए जान अवश्य चली गई।

लड़के/लड़की के माता-पिता को जब यह बात मालूम पड़ती है कि हमारे बेटे/बेटी का उससे LOVE है तो वे उन्हें साम, दाम, दण्ड से उनको समझाते हैं, उनको ऐसे निकृष्ट कार्यों से होने वाली हानियाँ बताते हैं, इन सब बातों से जो समझदार होते हैं जिन्होंने नासमझी में LOVE किया है, वे समझ जाते हैं अर्थात् LOVE छोड़कर सही रास्ता पकड़ लेते हैं लेकिन जो मूर्ख होते हैं वे तो शायद मरने के बाद भी नहीं समझ पाते हैं कि हमने यह गलत किया है। एक दिन एक लड़के की प्रेमिका ने अपने प्रेमी से माँ का कलेजा लाने के लिए कहा। निर्दयी लड़का अपनी प्रेमिका के प्रेम में सुध-बुध ही भूल गया। वह अपनी माँ को मारकर उसका कलेजा निकाल ले आया उसे देखकर उसकी प्रेमिका धुत्कारते हुए बोली-छी-छी भाग जा यहाँ से। अब कभी लौटकर मत आना मैं तेरे जैसे पापियों से प्रेम नहीं कर सकती। आज तू मेरे प्रेम के वश में होकर अपनी माँ को मार सकता है तो कल (भविष्य में) किसी और

के वश में होकर मुझे भी मार सकता है। जब प्रेमिका ने उसको नकार दिया, डॉट-फटकार कर भगा दिया तो उसको इतनी ग्लानि आई कि वह उसी कटार से जिससे उसने अपनी माँ का कलेजा निकाला था, अपनी हत्या कर लेता है। उसे न प्रेमिका मिली और न घर में माँ ही बची बल्कि उसको आत्महत्या से उत्पन्न होने वाला पाप/दुर्गति अवश्य मिली।

इसी प्रकार एक टीचर एक सेठ के घर ट्यूशन पढ़ाने के लिए जाता था। वह घर के सभी बच्चों को पढ़ाता था इसलिए 3-4 घंटे सेठ के घर पर रहना पड़ता था। जब कभी घर की मालकिन बच्चों को देखने आ जाया करती थी। टीचर का धीरे-धीरे मालकिन से भी परिचय बढ़ने लगा। कुछ ही दिनों में दोनों का परिचय प्रेम के रूप में परिवर्तित होने लगा। उनका यह व्यवहार जब सेठ को मालूम पड़ा तो उसने इन-डायरेक्ट उन दोनों को समझाने की कोशिश की लेकिन उन दोनों के ऊपर सेठ के व्यवहार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सेठ ने एक दिन क्रोधित होकर टीचर को अपने परिवार सहित भोजन का निमंत्रण दिया। जब टीचर अपने परिवार सहित सेठ के यहाँ भोजन के लिए आया तो सेठ ने उसको गुप्त रूप से मरवा डाला। एक व्यक्ति के LOVE करने से पूरे परिवार को मौत का मुँह देखना पड़ा। कहने का सार यह है LOVE करने वाले को सुख नहीं मिल सकता है।

- **क्या LOVE सच्चा होता है ?**

वैसे तो संसार में किसी से किसी का प्रेम सच्चा नहीं होता है फिर LOVE करने वालों का प्रेम तो सच्चा हो ही कैसे सकता है ? LOVE में हमेशा भावुकता रहती है, LOVE में समर्पण के स्थान पर आकर्षण होता है जहाँ समर्पण नहीं है वहाँ सच्चाई कैसे हो सकती है ? वास्तव में LOVE करने वालों का प्रेम तो तब तक रहता है जब तक सामने वाले में योग्यता होती है उसके पास आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन होते हैं, धन होता है। जिस प्रकार वृक्ष पर जब तक पत्ते, फूल, फल आदि होते हैं तब तक पक्षी आकर उस पर विश्राम लेते हैं, पत्ते आदि समाप्त होने पर कोई उसके निकट तक नहीं जाता है उसी प्रकार LOVE वाले भी योग्यताएँ समाप्त होने पर अथवा दुःख का समय आने पर एक-दूसरे को छोड़ देते हैं। व्यवहार से नहीं भी छोड़े तो



एक प्रकार से भार मानकर ही एक-दूसरे का निर्वाह करते हैं, कई लोग तो परिस्थिति आने पर किसी दूसरे से ही LOVE करना प्रारम्भ कर देते हैं।

एक लड़की का एक लड़के से बहुत गाढ़ा प्रेम हो गया। जब भी लड़का उससे मिलने जाता 200-400 रुपये की गिफ्ट अवश्य ले जाता था तो लड़की भी उसको काफी वस्तुएँ देती थी। दोनों ही धनाढ्य घर के बच्चे थे। जब शादी का प्रसंग आया तो लड़की ने कहा-मैं उस लड़के को छोड़कर किसी से शादी नहीं कर सकती। उसके माता-पिता ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसने आखिर कह दिया कि यदि आप मेरी शादी उस लड़के से नहीं करोगे तो मैं आत्महत्या करके मर जाऊँगी। माता-पिता ने उसका वास्तविक प्रेम समझकर उस लड़के के साथ उसकी शादी करवा दी। शादी के बाद लड़का यदि कभी कारणवश दस बजे के बाद घर पहुँचता तो वह (पत्नि)उसको बहुत डाँटती, खरी-खोटी सुनाती रहती थी। लड़का छह महीने में ही ऐसा परेशान हो गया कि एक दिन वह आत्महत्या करने के लिए रेल्वे स्टेशन पर पहुँच गया। रेल्वे स्टेशन पर पहुँचते-पहुँचते ही उसके मित्रों को किसी माध्यम से जानकारी मिल गई। वे वहाँ पहुँच गये और समझा-बुझाकर उसको ले आये तथा भाभी को भी सारी बात समझा दी। लेकिन फिर भी उसने (लड़की ने) अपने व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं किया फलतः उसने एक दिन जबरन ट्रक से टक्कर करवा के मर गया अर्थात् आत्महत्या कर ली। अब उसके LOVE की कहानी आगे सुनो। उसके पाँच महीने का गर्भ था उसके (पति के) मरते ही उसने एवोर्सन करवा लिया और दूसरी शादी कर ली। LOVE करने वाले सोचें यदि उसका सच्चा LOVE था तो पति के मरते ही उसने दूसरी शादी क्यों कर ली ? जिसके बिना वह मर रही थी उसने उसके साथ ऐसा व्यवहार कैसे किया कि उसे मजबूर होकर आत्महत्या करनी पड़ी ? यदि उसका अन्तरंग से LOVE था तो क्या उसके मरने के बाद गर्भस्थ शिशु को अपने प्रेमी की निशानी मानकर नहीं जी सकती थी ?

- **Love Marrige में रोज लड़ाई क्यों ?**

जब LOVE होता है तब लड़के को एक काम ही रहता है लड़की से मिलना, लड़की के लिए गिफ्ट ले जाना, लड़की के साथ घूमना, फोन पर बातें

करते रहना आदि। लेकिन शादी हो जाने के बाद लड़के पर अनेक प्रकार की जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं, पहले उसको लड़की की कोई माँग पूरी नहीं करनी पड़ती थी और न ही लड़की की कोई मांगें ही रहती थी क्योंकि तब तक लड़की की आवश्यकताओं की पूर्ति उसके माता-पिता, भैया आदि कर देते थे लेकिन शादी के बाद सुबह से लेकर शाम तक छोटी से लेकर बड़ी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति उसी (पति) को करनी होती है उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है, धनार्जन के लिए उसे अपना अधिक समय व्यापार-व्यवसाय में लगाना पड़ता है। व्यापार-व्यवसाय में लग जाने से तथा व्यापार के साथ-साथ उसे अपने माता-पिता छोटे भाई-बहिन आदि की तरफ भी ध्यान देना आवश्यक होता है, क्योंकि शादी के पहले वह बच्चा कहलाता था, अब वह बच्चा नहीं एक पुरुष बन जाता है। एक बच्चा हो जाने पर वह एक परिवार का स्वामी बन जाता है। अब उसको घर आये गये रिस्तेदारों, मित्रों, अड़ोस-पड़ोस आदि के मान-सम्मान, व्यवहार, रीति-रिवाज आदि को निभाना भी आवश्यक होता है तो पत्नि को भी इन सब कार्यों में हाथ बँटाना, इन सबके लिए योग्य भोजन, नास्ता, गिफ्ट आदि की व्यवस्था करनी पड़ती है एक बच्चा हो जाने पर उसको समय पर दूध पिलाना, नहलाना-धुलाना, घुमाना, उसका थोड़ा सा भी स्वास्थ्य खराब हो जावे तो समझो पूरे दिन-रात उसी में लगा रहना पड़ता है। घर में भी सास-ससुर, देवर-ननद आदि की इच्छा के अनुसार भोजन आदि तैयार करना जब नल आ जावें अर्थात्, यदि आधी रात में भी नल में पानी आ जावे तो भी उठकर पानी भरना, घर की साफ-सफाई आदि में समय देना ही पड़ता है इन सबमें समय जाने पर आप स्वयं सोचें पति-पत्नि को और पत्नि-पति को कितना समय दे पायेंगे। जबकि पहले जब चाहे जहाँ कहीं घूमने का प्लान बना लेते थे, जब कभी होटल में जाकर गुलछर्रे उड़ा लेते थे जब कभी सिनेमा देखने चले जाते थे अब तो मेरे अनुमान से यदि पति का दुकान/ऑफिस से फोन आ जावे तो पत्नि को अटेंड करने का और यदि पत्नि का फोन दुकान पर पहुँच जावे तो पति को अटेंड करने का समय नहीं रहता है। यदि अटेंड कर भी ले तो तत्काल उसके कहे अनुसार करने का समय तो मिल ही नहीं सकता। शादी के पहले



और शादी के बाद एक-दूसरे की अपेक्षाओं को पूरा करने में इतना अन्तर आ जाता है कैसे घर में शांति रह सकती है ?

दूसरी बात प्रेम में पागल होकर दोनों ही शादी के पहले एक-दूसरे से इतने वादे कर लेते हैं जिनकी कोई गिनती नहीं होती है कुछ वादों को दोनों भूल जाते हैं, कुछ वादों को पूरा करने की कोशिश करते हैं, पूरे करते हैं लेकिन कुछ वादे ऐसे होते हैं, जिनको करते समय तो कुछ नहीं लगता पर उनको निभाने में जब पसीना आने लगता है तो मजबूर होकर अपने ही वादों से मुकरना पड़ता है और यही एक कारण बन जाता है लड़ाई का/ इसी बात को लेकर दोनों लड़ते हैं और दूसरे भी अनेक वादे तोड़ देते हैं। एक लड़का पढ़ाई करने के लिए रूस गया वहाँ उसको एक अपनी क्लास फेलो ठाकुर की लड़की से LOVE कर लिया। उसके मित्रों ने जैसे-तैसे करके उससे उसका पीछा छुड़वा दिया। लेकिन भारत में एक क्रिश्चियन लड़की से LOVE ही नहीं विवाह भी कर लिया। एक बार वह लड़का जिसका भक्त था, वे गुरु उसको (उसकी पत्नी को) मिल गये। वह गुरु से हैलो और बाय-बाय करके आगे बढ़ गई। उसने अपने पति को भी यह बात बताई। पति को अपने गुरु के प्रति किये गये व्यवहार से बहुत दुःख हुआ। उसने गुरु के पास जाकर क्षमा माँगी, आँसू बहाये...। एक दिन वह समाज के (जैनी) लोगों के किसी फंक्शन में गया था। मित्रों-मित्रों की बातों में लगभग रात के साढ़े ग्यारह बज गये वह घर नहीं पहुँच पाया। साढ़े ग्यारह बजे तक भी पति को घर नहीं आया देख वह (पत्नी) उसके कपड़े लेकर वहाँ पहुँच गई और सब लोगों के बीच में फेंकती हुई बोली, ये तुम्हारे कपड़े अब तुम यहीं रहना।

- **किसके बच्चे LOVE करते हैं ?**

1. जो माता-पिता अपने बच्चों के प्रति लापरवाह होते हैं अथवा जिनको अपने बच्चों के प्रति अधिक विश्वास होता है कि हमारे बच्चे तो ऐसे हो ही नहीं सकते हैं। हम तो स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोच सकते हैं कि हमारे बच्चों ने ऐसा (LOVE जैसा दुष्कृत्य) काम किया होगा। ऐसी विचारधारा वाले माता-पिता अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता देते हैं लेकिन बच्चे स्वतंत्र रहते हुए कब स्वच्छन्द

हो जाते हैं उनके माता-पिता इस बात को समझ ही नहीं पाते हैं। हाँ, यह बात अलग है कि माता-पिता अपने बच्चों पर विश्वास रखें, माता-पिता को अपने बच्चों पर विश्वास रखना ही चाहिए। विश्वास के साथ माता-पिता बच्चों पर अनुशासन रखें, स्वयं अनुशासित रहें और बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण अवश्य करते जावें। जो माता-पिता अपने बच्चों पर अनुशासन नहीं रखते हैं, उनके बच्चों के LOVE के चक्कर में पड़ने की संभावनाएँ बहुत अधिक रहती हैं।

2. जो माता-पिता आपस में विवेक पूर्ण व्यवहार नहीं करते हैं अर्थात् बच्चों के सामने या बच्चों की आँख बचाकर पति-पत्नी सम्बन्धी गुप्त क्रियायें करने की कोशिश करते हैं उनके बच्चे भी LOVE की तरफ सहज रूप से आकर्षित हो जाते हैं।
3. जो माता-पिता रात्रि में दस बजे के बाद बच्चे क्या कर रहे हैं टी.वी. पर कौन-सी पिक्चर देख रहे हैं ? इस बात का ख्याल नहीं रखते हैं या ब्लू फिल्म आदि अश्लील कार्यक्रमों की सीड़ियाँ घर में रखते हैं ऐसे लोग स्वयं भी तथा उनके बच्चे LOVE करने में इन्ट्रेस्ट लेते हैं।
4. जो माता-पिता बच्चे रात्रि में दस बजे के बाद कहाँ घूम रहे हैं, उनकी मित्र मंडली कैसी है, वे कहाँ खाते हैं क्या खाते हैं, क्या खेलते हैं, शराब आदि व्यसनों से मुक्त हैं या व्यसनी हैं आदि बातों का ध्यान नहीं रखते है उनके बच्चे LOVE करते हैं।
5. जो माता-पिता अपने बच्चों को LOVE से होने वाले दुष्फलों से समय-समय पर अवगत नहीं कराते हैं उनके बच्चे भी LOVE के चक्कर में फँस जाते हैं।
6. बड़े भाई, चाचा, बहिन आदि की लम्बी उम्र तक शादी नहीं करने से भी बच्चों में इस प्रकार का भाव उत्पन्न हो सकता है।
7. बच्चों को सत्संगति में ले जाना, सत्साहित्य पढ़ाना एवं संतों का समागम अर्थात् उनके पास आना-जाना आदि नहीं कराने से भी बच्चों में LOVE के संस्कार जागृत होते हैं।



- **कुशील पाप से बचाने के लिए ध्यान दें :**

1. रात्रि में दस बजे के बाद आप स्वयं टी. वी. नहीं देखे और बच्चों पर टी.वी. देखने की सख्त मनाही रखें।
2. कुशील पाप का अर्थ समय-समय पर समझाते रहें।
3. कुशील पाप के दुष्फलों की चर्चा करते रहे, समाचार-पत्र (News paper) में इस सम्बन्धी समाचार (News) आवें तो बच्चों को अवश्य पढ़ाते रहें।
4. आपके रिश्तेदार, आस-पड़ोस मित्र आदि के यहाँ यदि LOVE का दुष्परिणाम हुआ हो तो अवश्य दिखावें /बतावें।
5. सदाचारी पुरुषों, पौराणिक शीलवान व्यक्तियों तथा सतियों की कथा बचपन से ही सुनाते रहें।
6. घर में रोज ही रोज पुड़ी, मिठाई, चट-पटा भोजन नहीं बनावें और न होटल, बाजार आदि में ज्यादा चटपटा खावें। क्योंकि प्रतिदिन चटपटा अधिक मीठा-गरिष्ठ भोजन करने से भी वासनाएँ जागृत होती हैं।
7. बहुत लम्बी उम्र तक बच्चों के विवाह के बारे में मौन नहीं रखें अर्थात् योग्य बच्चे केसाथ ही साथ शादी का विचार/चर्चा शुरु कर दें।
8. घर में ऐसी सी.डी., कैसिट नहीं रखें जो कुशील पाप की ओर प्रेरित करती हों, डिस्क से ऐसे चैनल के कनेक्शन भी नहीं लें जिनमें कामोत्पादक कार्यक्रम आते हैं।
9. बच्चों को अपनी उम्र तथा हेल्थ-हाइट को देखते हुए वस्त्रों का चयन करें अर्थात् लड़की को ऐसे पतले वस्त्र जिनमें से अन्दर समीज और अन्दर अंगोपांग भी दिखाई देते हों, जीन्स जिसमें से कूल्हें अलग से दिखाई दें, उतने टाइट कपड़े जिनमें से सीने की अश्लीलता दिखाई दे, ऐसे कपड़े नहीं पहनावें।
10. बचपन से ही सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग से दूर रखें ताकि उसकी आदत पूरे दिन तैयार होने की नहीं पड़े। सजी सजाई लड़की को देखकर भी सहज रूप से लड़कों में आकर्षण उत्पन्न होता है।

## ❑ LOVE से बचने के लिए सावधानियाँ :

1. लड़के-लड़की आपस में विशेष मित्रता नहीं रखें। अर्थात् लड़की-लड़की को ही मित्र बनावें।
2. लड़के-लड़की आपस में नहीं मिलें। एकान्त में बोलना-बातें करना, दोनों का एक साथ होटल में जाना, सिनेमा देखने जाना आदि कार्य नहीं करें।
3. लड़के-लड़की फोन-मोबाइल आदि से ज्यादा सम्पर्क नहीं रखें, पत्र व्यवहार तो करें ही नहीं।
4. अश्लील उपन्यास, कॉमिक्स आदि नहीं पढ़ें, पति-पत्नी सम्बन्धी पिक्चरें, सीरियल आदि नहीं देखें, सुनें।
5. लड़के-लड़की एक-दूसरे को खिलाना-पिलाना, नास्ता कराना, खाने-पीने की वस्तुएँ देना आदि अनावश्यक काम नहीं करें।
6. लड़के-लड़की नोट्स, गाइड, पाठ्य-पुस्तक आदि के लेन-देन का व्यवहार करते समय अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करें अर्थात् भाई-बहिन का रिश्ता ही रखें और कोई नहीं।
7. अपनी उम्र और हेल्थ हाइट के अनुसार वस्त्र पहनें। पुराने वस्त्र जो हेल्थ-हाइट बढ़ जाने से छोटे या चुस्त हो गये हैं उनको पहनकर कम से कम एक बार आइने में देखकर यह अवश्य सोच लें कि मैं इन वस्त्रों में कैसी लग रही हूँ?
8. लड़के-लड़की इतना संकल्प अवश्य रखें कि जब तक मेरी पढ़ाई पूरी नहीं हो जाती अथवा शादी नहीं हो जाती है तब तक मेरा व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन करने का नियम है, आपका मन कभी लड़कों की ओर आकर्षित नहीं होगा। क्योंकि लड़कों के साथ सम्पर्क करने में ब्रह्मचर्य नहीं पल पाता है।
9. अधिक तला-गला, चटपटा, अधिक मात्रा में चाय-कॉफी, गुटका, पाउच आदि का उपयोग नहीं करें।



## ❑ LOVE से बचने के लिए बच्चे ध्यान दें :

1. अच्छे मित्रों की संगति करें, चाहे आपसे बड़ी उम्र के भी क्यों न हों।
2. धार्मिक कार्यक्रमों को अवश्य अटेण्ड करें, यदि सम्भव हो तो उनमें भाग भी लें।
3. सुसंस्कारित लड़के/लड़कियाँ जो साधु के पास आते-जाते रहते हैं, व्यसन मुक्त हैं, उनके साथ उठना-बैठना, खाने-पीने आदि का व्यवहार अवश्य रखें।
4. दिन में 15-20 मिनट सत्साहित्य अवश्य पढ़ें।
5. यदि क्षमता हो तो वर्ष में एक-दो बार तीर्थक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र, सिद्धक्षेत्र या गुरुजनों की वन्दना अवश्य करें।

## उपसंहार

इस प्रकार यहाँ LOVE क्या है ?, LOVE किसको होता है?, LOVE कैसे होता है ?, LOVE प्रारम्भ कैसे होता है ?, LOVE होने के बाद लड़के-लड़कियों का व्यवहार कैसा हो जाता है ?। LOVE करने वालों की यदि शादी नहीं हो पाती है तो उनकी क्या हालत होती है अर्थात् उनको क्या-क्या करना पड़ता है या वे क्या-क्या कर लेते हैं ? प्रेमविवाह (Love Marrige) होने के बाद उनको क्या फल मिलता है तथा LOVE से बचने के लिए बच्चों तथा उनके माता-पिता को क्या सावधानी रखनी चाहिए। इन सब बातों का न अति संक्षेप में और न अति विस्तार से वर्णन किया गया है। सब बच्चे LOVE का सही-सही अर्थ समझकर LOVE जैसे दुष्कृत्य से बचें तथा सम्पर्क में आने वाले अपने मित्र-भाई, बहिन, अड़ोस-पड़ोस, रिश्तेदार आदि को भी बचावें और भविष्य में अपने घर, समाज, देश के सभी नागरिक सदाचारी, सभ्य तथा स्वदार संतोषी बनें, इसी भावना के साथ -

**बच्चों LOVE में ना फँसो, जीवन हो निष्काम।**
**इहभव परभव दुख मिले, हो जावे बदनाम॥**

**समाप्त**